दादा भगवान कथित

मृत्यु

समय, पहले और पश्चात्...

जहाँ जन्म है, वहाँ मृत्यु है ही।
जन्म मरण आत्मा केनहीं है
आत्मा परमानेन्ट है.

दादा भगवान कथित

मृत्यु समय, पहले और पश्चात्...

मूळ गुजराती संकलन : डॉ. नीरू बहन अमीन

अनुवाद : महात्मागण

प्रकाशक : अजीत सी. पटेल
दादा भगवान विज्ञान फाउन्डेशन
1, वरूण अपार्टमेन्ट, 37, श्रीमाली सोसायटी,
नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन के सामने,
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009,
Gujarat, India.
फोन : +91 79 3500 2100

© Dada Bhagwan Foundation,
5, Mamta Park Society, B\h. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad -380014, Gujarat, India.
Email : info@dadabhagwan.org
Tel : + 91 79 3500 2100

All Rights Reserved. No part of this publication may be shared, copied, translated or reproduced in any form (including electronic storage or audio recording) without written permission from the holder of the copyright. This publication is licensed for your personal use only.

प्रथम संस्करण : 3,000 प्रतियाँ फरवरी, 2010
रीप्रिन्ट : 20,000 प्रतियाँ सितम्बर, 2010 से जनवरी, 2015
नयी रीप्रिन्ट : 5,000 प्रतियाँ मार्च, 2017

भाव मूल्य : 'परम विनय' और 'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : 15 रुपए

मुद्रक : अंबा मल्टीप्रिन्ट
B-99, इलेक्ट्रॉनिक्स GIDC,
क-6 रोड, सेक्टर-25,
गांधीनगर-382044.
Gujarat, India.
फोन : +91 79 3500 2142

त्रिमंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो ऊवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥
जय सच्चिदानंद

'दादा भगवान' कौन?

जून 1958 की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर 'दादा भगवान' पूर्ण रूप से प्रकट हुए और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्‌भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। 'मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?' इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजी भाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

'व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं', इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षुजनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्‌भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को 'दादा भगवान कौन?' का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ''यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं हैं, वे तो 'ए.एम.पटेल' हैं। हम ज्ञानीपुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे 'दादा भगवान' हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और 'यहाँ' हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।''

निवेदन

ज्ञानी पुरुष संपूज्य दादा भगवान के श्रीमुख से अध्यात्म तथा व्यवहारज्ञान से संबंधित जो वाणी निकली, उसको रिकॉर्ड करके, संकलन तथा संपादन करके पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता है। विभिन्न विषयों पर निकली सरस्वती का अद्‌भुत संकलन इस पुस्तक में हुआ है, जो नए पाठकों के लिए वरदान रूप साबित होगा।

प्रस्तुत अनुवाद में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि वाचक को दादाजी की ही वाणी सुनी जा रही है, ऐसा अनुभव हो, जिसके कारण शायद कुछ जगहों पर अनुवाद की वाक्य रचना हिन्दी व्याकरण के अनुसार त्रुटिपूर्ण लग सकती है, लेकिन यहाँ पर आशय को समझकर पढ़ा जाए तो अधिक लाभकारी होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में कई जगहों पर कोष्ठक में दर्शाए गए शब्द या वाक्य परम पूज्य दादाश्री द्वारा बोले गए वाक्यों को अधिक स्पष्टतापूर्वक समझाने के लिए लिखे गए हैं। जबकि कुछ जगहों पर अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ के रूप में रखे गए हैं। दादाश्री के श्रीमुख से निकले कुछ गुजराती शब्द ज्यों के त्यों *इटालिक्स* में रखे गए हैं, क्योंकि उन शब्दों के लिए हिन्दी में ऐसा कोई शब्द नहीं है, जो उसका पूर्ण अर्थ दे सके। हालांकि उन शब्दों के समानार्थी शब्द अर्थ के रूप में, कोष्ठक में और पुस्तक के अंत में भी दिए गए हैं।

ज्ञानी की वाणी को हिन्दी भाषा में यथार्थ रूप से अनुवादित करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु दादाश्री के आत्मज्ञान का सही आशय, ज्यों का त्यों तो, आपको गुजराती भाषा में ही अवगत होगा। जिन्हें ज्ञान की गहराई में जाना हो, ज्ञान का सही मर्म समझना हो, वह इस हेतु गुजराती भाषा सीखें, ऐसा हमारा अनुरोध है।

अनुवाद से संबंधित कमियों के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हैं।

❖❖❖❖❖

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

1. आत्मसाक्षात्कार
2. ज्ञानी पुरुष की पहचान
3. सर्व दुःखों से मुक्ति
4. कर्म का सिद्धांत
5. आत्मबोध
6. मैं कौन हूँ ?
7. पाप-पुण्य
8. भुगते उसी की भूल
9. एडजस्ट एवरीव्हेयर
10. टकराव टालिए
11. हुआ सो न्याय
12. चिंता
13. क्रोध
14. प्रतिक्रमण (सं, ग्रं)
16. दादा भगवान कौन ?
17. पैसों का व्यवहार (सं, ग्रं)
19. अंतःकरण का स्वरूप
20. जगत कर्ता कौन ?
21. त्रिमंत्र
22. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म
23. चमत्कार
24. प्रेम
25. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (सं, पू, उ)
28. दान
29. मानव धर्म
30. सेवा-परोपकार
31. मृत्यु समय, पहले और पश्चात्
32. निजदोष दर्शन से... निर्दोष
33. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार (सं)
34. क्लेश रहित जीवन
35. गुरु-शिष्य
36. अहिंसा
37. सत्य-असत्य के रहस्य
38. वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी
39. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार (सं)
40. वाणी, व्यवहार में... (सं)
41. कर्म का विज्ञान
42. सहजता
43. आप्तवाणी - 1
44. आप्तवाणी - 2
45. आप्तवाणी - 3
46. आप्तवाणी - 4
47. आप्तवाणी - 5
48. आप्तवाणी - 6
49. आप्तवाणी - 7
50. आप्तवाणी - 8
51. आप्तवाणी - 9
52. आप्तवाणी - 13 (पू, उ)
54. आप्तवाणी - 14 (भाग-1)
55. ज्ञानी पुरुष (भाग-1)

(सं - संक्षिप्त, ग्रं - ग्रंथ, पू - पूर्वार्ध, उ - उत्तरार्ध)

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई है। वेबसाइट **www.dadabhagwan.org** पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में ''दादावाणी'' मैगेज़ीन प्रकाशित होता है।

संपादकीय

मृत्यु मनुष्य को कितना ज़्यादा भयभीत करती है, कितना ज़्यादा शोक उत्पन्न करवाती है और निरे दुःख में ही डूबोकर रखती है। और हर एक मनुष्य को जीवन में किसी न किसी की मृत्यु का साक्षी बनना पड़ता है। उस समय मृत्यु के संबंध में सैकड़ों विचार उठते हैं कि मृत्यु के स्वरूप की वास्तविकता क्या है? लेकिन उसका रहस्य नहीं खुलने के कारण वहीं का वहीं अटक जाता है। इस मृत्यु के रहस्यों को जानने के लिए हर कोई उत्सुक होता ही है। और उसके बारे में बहुत कुछ सुनने या पढ़ने में आता है, लोगों से बातें जानने को मिलती हैं। लेकिन वे मात्र बुद्धि की *अटकणें* (जो बंधनरूप हो जाए) ही हैं।

मृत्यु क्या है? मृत्यु से पहले क्या होता होगा? मृत्यु के समय क्या होता होगा? मृत्यु के पश्चात् क्या होता है? मृत्यु के अनुभव बताने वाला कौन? जिसकी मृत्यु होती है, वह अपने अनुभव कह नहीं सकता। जो जन्म पाता है, वह अपनी पहले की अवस्था स्थिति नहीं जानता है। इस तरह जन्म से पहले और मृत्यु के बाद की अवस्था कोई नहीं जानता है। इसलिए मृत्यु से पहले, मृत्यु के समय और मृत्यु के पश्चात् किस दशा में से गुज़रना पड़ता है, उसका रहस्य, रहस्य ही रह जाता है। दादाश्री ने अपने ज्ञान में देखकर ये सभी रहस्य, जैसे हैं वैसे, यथार्थ रूप से खुले किए हैं, जो यहाँ संकलित हुए हैं।

मृत्यु का रहस्य समझ में आते ही मृत्यु का भय चला जाता है।

प्रिय स्वजन की मृत्यु के समय हमें क्या करना चाहिए? हमारा सही फ़र्ज़ क्या है? उसकी गति किस प्रकार सुधारनी चाहिए? प्रिय स्वजन की मृत्यु के बाद हमें क्या करना चाहिए? हम किस समझ से समता में रहें?

और जो भी लोकमान्यताएँ हैं, जैसे कि श्राद्ध, तेरही, ब्रह्मभोज, दान, गरुड़ पुराण आदि, उनकी सत्यता कितनी? मरने वाले को क्या-क्या पहुँचता है? ये सब करना चाहिए या नहीं? मृत्यु के बाद की गति की स्थिति आदि सभी खुलासे यहाँ स्पष्ट होते हैं।

ऐसे भयभीत रखने वाले मृत्यु के रहस्य जब पता चल जाते हैं, तब मनुष्य को ऐसी स्थिति पर उसके जीवन काल के व्यवहार के ऐसे संयोगों पर निश्चित ही सांत्वना प्राप्त होती है।

'ज्ञानीपुरुष' वे, जो देह से, देह की सभी अवस्थाओं से, जन्म से, मृत्यु से अलग ही रहे हैं। निरंतर उनके ज्ञाता-दृष्टा रहते हैं, और अजन्म-अमर आत्मा की अनुभव दशा में बरतते हैं वे! जीवन से पूर्व की, जीवन के पश्चात् की और देह की अंतिम अवस्था में अजन्म-अमर ऐसे आत्मा की स्थिति की हक़ीक़त क्या है, यह ज्ञानीपुरुष ज्ञान दृष्टि से खुल्लमखुल्ला कह देते हैं।

आत्मा तो सदैव जन्म-मृत्यु से परे ही है, वह तो केवलज्ञान स्वरूप ही है। केवल ज्ञाता-दृष्टा ही है। जन्म-मृत्यु आत्मा को हैं ही नहीं। फिर भी बुद्धि से जन्म-मृत्यु की परंपरा का सर्जन होता है, जो मनुष्य के अनुभव में आता है। तब स्वाभाविक रूप से मूल प्रश्न सामने आता है कि जन्म-मृत्यु किस प्रकार होते हैं? उस समय आत्मा और उसके साथ कौन-कौन सी चीज़ें होती है? उन सब का क्या होता है? पुनर्जन्म किसका होता है? कैसे होता है? आवागमन किसका है? कार्य में से कारण और कारण में से कार्य की परंपरा का सर्जन कैसे होता है? वह कैसे रुक सकता है? आयुष्य के बंध किस प्रकार पड़ते हैं? आयुष्य किस आधार पर निश्चित होता है? ऐसे सनातन प्रश्नों की *सचोट*-समाधानकारी, वैज्ञानिक समझ ज्ञानीपुरुष के सिवाय कौन दे सकता है?

और उससे भी आगे, गतियों में प्रवेश के कानून क्या होंगे? आत्महत्या क्यों करते हैं और उसके परिणाम क्या हैं? प्रेतयोनि क्या है? क्या भूतयोनि है? क्षेत्र परिवर्तन के नियम क्या हैं? भिन्न-भिन्न गतियों का आधार क्या है? गतियों में से मुक्ति कैसे मिल सकती है? मोक्षगति प्राप्त करने वाला आत्मा कहाँ जाता है? सिद्धगति क्या है? ये सारी बातें यहाँ स्पष्ट की गई हैं।

आत्म-स्वरूप और अहंकार-स्वरूप की सूक्ष्म समझ ज्ञानी के सिवा और कोई नहीं समझा सकता।

मृत्यु पश्चात् फिर से मरना नहीं पड़े, फिर से जन्म नहीं लेना पड़े, उस दशा को प्राप्त करने से संबंधित सभी बातें यहाँ स्पष्टतया सूक्ष्म रूप से संकलित हुई हैं, जो पाठक के लिए संसार व्यवहार और अध्यात्मिक प्रगति में हितकारी होंगी।

- डॉ. नीरु बहन अमीन के जय सच्चिदानंद

मृत्यु समय, पहले और पश्चात्...

मुक्ति, जन्म-मरण से

प्रश्नकर्ता : जन्म-मरण के झँझट में से कैसे छूटें?

दादाश्री : बहुत अच्छा पूछा। क्या नाम है आपका?

प्रश्नकर्ता : चंदू भाई।

दादाश्री : सच में चंदू भाई हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : चंदू भाई तो आपका नाम है, नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो फिर आप कौन हैं? आपका नाम चंदू भाई है, यह तो हम सब को कबूल है, मगर आप कौन हो?

प्रश्नकर्ता : इसीलिए तो आया हूँ।

दादाश्री : जब वह जान लेंगे, तब जन्म-मरण का झँझट छूटेगा।

अभी तो मूल उस चंदू भाई के नाम पर ही यह सब चलता रहा है न? सभी चंदू भाई के नाम पर?! अरे, धोखा हो जाएगा यह तो! आप पर थोड़ा तो रखना था न?

अरथी मतलब कुदरत की ज़ब्ती! कैसी ज़ब्ती? तो कहते हैं, नाम वाला जो बैंक बैलेन्स था, वह ज़ब्त हो गया, बच्चे ज़ब्ती में गए, बंगला ज़ब्ती में गया। फिर ये कपड़े जो नाम पर रहे हैं, वे भी ज़ब्ती में गए!

सबकुछ ज़ब्ती में गया। तो कहता है 'साहब, अब मुझे वहाँ साथ क्या ले जाने का?' तब कहे 'लोगों के साथ जो गुत्थियाँ उलझाई थीं, उतनी ले जाओ!' इसलिए ये नाम वाला सब ज़ब्ती में जाने वाला है। इसलिए हमें अपने खुद के लिए कुछ करना चाहिए न? नहीं करना चाहिए?

भेजो, अगले जन्म की गठरियाँ

जो हमारे रिश्तेदार नहीं हों, ऐसे दूसरे लोगों को कुछ सुख दिया हो, फेरा लगाकर, दूसरा कुछ भी उन्हें दिया हो तो वह 'वहाँ' पहुँचेगा। रिश्तेदार नहीं, परंतु दूसरे लोगों के लिए। फिर यहाँ लोगों को दवाईयों का दान दिया हो, औषधदान, दूसरा आहारदान दिया हो, फिर ज्ञानदान दिया हो और अभयदान वह सब दिया हो तो वह वहाँ सब आएगा। इनमें से कुछ देते हो या ऐसा ही सब? खा जाते हो?

अगर साथ ले जा सकते तो यहाँ तो ऐसे भी हैं कि तीन लाख का कर्ज़ करके जाएँ! धन्य हैं न! जगत् ही ऐसा है, इसलिए नहीं ले जा पाते, यही अच्छा है।

माया की करामात

जन्म माया करवाती है, शादी माया करवाती है और मृत्यु भी माया करवाती है। पसंद हो या नापसंद हो, लेकिन छुटकारा नहीं है। पर इतनी शर्त होती है कि माया का साम्राज्य नहीं है। मालिक आप हो। अर्थात् आपकी इच्छा के अनुसार हुआ है। पिछले जन्म की आपकी जो इच्छा थी, उसका हिसाब निकला और उसके अनुसार माया चलाती है। फिर अब शोर मचाएँ तो नहीं चलता। हमने ही माया से कहा था कि यह मेरा लेखा-जोखा है।

ज़िंदगी एक क़ैद

प्रश्नकर्ता : आपके हिसाब से ज़िंदगी क्या है?

दादाश्री : मेरे हिसाब से ज़िंदगी, वह जेल है, जेल! और चार प्रकार की जेल हैं।

पहली नज़रक़ैद है। देवलोग नज़रक़ैद में हैं। ये मनुष्य सादी क़ैद में हैं। जानवर कड़ी मज़दूरी वाली क़ैद में हैं और नर्क के जीव उमरक़ैद में हैं।

जन्म से ही चलनी शुरू हो जाती है आरी

यह शरीर भी हर क्षण मर रहा है लेकिन लोगों को क्या कुछ पता है? पर अपने लोग तो लकड़ी के दो टुकड़े हो जाएँ और नीचे गिर पड़ें, तब कहेंगे, 'कट गया' अरे, यह कट ही रहा था, यह आरी चल ही रही थी।

मृत्यु का भय

यह निरंतर भय वाला जगत् है। एक क्षणभर के लिए भी निर्भयता वाला यह जगत् नहीं है और जितनी निर्भयता लगती है, उतना उसकी मूर्छा में है जीव। खुली आँखों से सो रहे हैं, इसलिए यह सब चल रहा है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा जाता है कि आत्मा मरता नहीं है, वह तो जीता ही रहता है।

दादाश्री : आत्मा मरता ही नहीं है, पर जब तक आप आत्मस्वरूप नहीं हुए, तब तक आपको भय लगता रहता है न? मरने का भय लगता है न? वह तो अभी शरीर में कुछ दर्द हो न, तो 'छूट जाऊँगा, मर जाऊँगा' ऐसा भय लगता है। देह पर दृष्टि नहीं हो तो खुद मर नहीं जाता है। यह तो 'मैं ही हूँ यह, यही मैं हूँ' ऐसा आपको शत-प्रतिशत है। आपको 'यह चंदू भाई, वह मैं ही हूँ, ऐसा शत-प्रतिशत विश्वास है न?'

यमराज या नियमराज?

इस हिन्दुस्तान के सारे वहम मुझे निकाल देने हैं। सारा देश बेचारा वहम में ही खत्म हो गया है। इसलिए यमराज नामक जंतु नहीं है, ऐसा

मैं गारन्टी से कहता हूँ। यदि कोई पूछे कि 'पर होता क्या है? कुछ तो होगा न?' तब मैंने कहा, 'नियमराज है।' अत: यह मैं देखकर कहता हूँ। मैं कुछ पढ़ा हुआ नहीं बोल रहा। यह मेरे दर्शन में देखकर, इन आँखों से नहीं, मेरा जो दर्शन है, उससे मैं देखकर यह सब कहता हूँ।

मृत्यु के बाद क्या?

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के बाद कौन सी गति होगी?

दादाश्री : सारी ज़िंदगी जो कार्य किए हों वे, सारी ज़िंदगी यहाँ पर जो धंधे चलाए हों-किए हों, मरते समय उन सब का हिसाब निकलता है। मरते समय एक घंटे पहले लेखा-जोखा सामने आता है। यहाँ पर बिना हक़ का जो सब उड़ाया हो, पैसे छीने हों, औरतें छीनी हों, बुद्धि से बिना हक़ का सब ले लेते हैं, चाहे किसी भी प्रकार से छीन लेते हैं। उन सभी की फिर जानवर गति होती है और यदि सारा जीवन सज्जनता रखी हो तो मनुष्य गति होती है। मरणोपरांत चार प्रकार की ही गतियाँ हुआ करती हैं। जो सारे गाँव की फ़सल जला दे, अपने स्वार्थ के लिए, ऐसे होते हैं न यहाँ? उन्हें अंत में नर्कगति मिलती है। अपकार के सामने भी उपकार करते हैं, ऐसे लोग सुपरह्युमन होते हैं, वे फिर देवगति में जाते हैं।

योग उपयोग परोपकाराय

मन-वचन-काया और आत्मा का उपयोग लोगों के लिए कर। तेरे लिए करेगा तो खिरनी का (पेड़ का नाम) जन्म मिलेगा। फिर पाँच सौ साल तक भुगतते ही रहना। फिर लोग तेरे फल खाएँगे, लकड़ियाँ जलाएँगे। फिर लोगों द्वारा तू क़ैदी की तरह काम में लिया जाएगा। इसलिए भगवान कहते हैं कि 'तेरे मन-वचन-काया और आत्मा का उपयोग दूसरों के लिए कर', फिर यदि तुझे कोई भी दु:ख आए तो मुझ से कहना।

और कहाँ जाते हैं?

प्रश्नकर्ता : देह छूटने के बाद वापस आने का रहता है क्या?

दादाश्री : और कहीं जाना ही नहीं है। यहीं के यहीं, अपने अगल-बगल में जो बैल-गाय बंधे हुए हैं, नज़दीक में जो कुत्ते रहते हैं न, अपने हाथों से ही खाते-पीते हैं, अपने सामने ही देखते रहते हैं, हमें पहचानते हैं, वे हमारे मामा हैं, चाचा हैं, फूफा हैं, वे ही सब यहीं के यहीं ही हैं। अत: मारना मत उन्हें। खाना खिलाना। आपके ही नज़दीक के हैं। आपको चाटने फिरते हैं, बैल भी चाटते हैं।

रिटर्न टिकट

प्रश्नकर्ता : बीच में गाय-भैंसों का जन्म क्यों मिलता है?

दादाश्री : यह तो अनंत जन्मों से, ये जो सभी लोग आए हैं, वे गायों-भैंसों में से ही आए हैं। और यहाँ से जो जाने वाले हैं, उनमें से पंद्रह प्रतिशत को छोड़कर बाकी सब वहाँ की ही टिकट लेकर आए हैं। कौन-कौन वहाँ की टिकट लेकर आए हैं? कि जो मिलावट करते हैं, जो बिना हक़ का छीन लेते हैं, बिना हक़ का भोगते हैं, बिना हक़ का आया कि जानवर का जन्म मिलेगा।

पिछले जन्मों की विस्मृति

प्रश्नकर्ता : हमें पिछले जन्म का याद क्यों नहीं रहता और यदि याद रहे तो क्या होगा?

दादाश्री : वह किसे याद आता है कि जिसे मरते समय ज़रा सा भी दु:ख नहीं पड़ा हो। और यहाँ पर अच्छे आचार-विचार वाला हो, तब उसे याद आता है। क्योंकि माता के गर्भ में तो अपार दु:ख होता है। लेकिन इस दु:ख के साथ वह भी दु:ख होता है-मृत्यु हुई उसका भी; ये दोनों होते हैं, अत: फिर वह बेभान हो जाता है दु:ख के कारण, इसलिए याद नहीं रहता है।

अंतिम पल में गठरियाँ समेट न...

एक अस्सी साल के चाचा थे, उन्हें अस्पताल में भरती किया था।

मैं जानता था कि ये दो-चार दिन में जाने वाले हैं यहाँ से, फिर भी मुझसे कहने लगे कि, 'वे मगन भाई तो मुझसे मिलने भी नहीं आए।' हमने कहा कि, 'मगन भाई तो आ गए।' तो कहने लगे कि, 'उस नगीनदास का क्या?' यानी कि बिस्तर में पड़े-पड़े *नोंध* करते रहते थे कि कौन-कौन मिलने आया। अरे, अपने शरीर का ध्यान रख न, अब दो-चार दिनों में तो जाना है। पहले तू अपनी गठरियाँ संभाल, तेरी यहाँ से ले जाने की गठरियाँ तो जमा कर। ये नगीनदास नहीं आए तो उसका क्या करना है?

बुख़ार आया और टप्प

बूढ़े चाचा बीमार हों और आपने डॉक्टर को बुलाया, सभी इलाज करवाया, फिर भी चल बसे। फिर शोक प्रदर्शित करने वाले होते हैं न, वे आश्वासन देने आते हैं। फिर पूछते हैं, 'क्या हो गया था चाचा को?' तब आप कहो कि असल में मलेरिया जैसा लगता था, पर फिर डॉक्टर ने बताया कि यह तो ज़रा फ्लू जैसा है!' वे पूछेंगे कि किस डॉक्टर को बुलाया था? आप कहो कि फलाँ को। तो कहेंगे, 'आपमें अक्कल ही नहीं है। उस डॉक्टर को बुलाने की ज़रूरत थी।' फिर दूसरा आकर आपको डाँटेगा, 'ऐसा करना चाहिए न! ऐसी बेवकूफी की बात करते हो?' यानी सारा दिन लोग डाँटते ही रहते हैं! इसलिए ये लोग तो उलटे चढ़ बैठते हैं, आपकी सरलता का लाभ उठाते हैं। इसलिए मैं आपको समझाता हूँ कि लोग जब दूसरे दिन पूछने आएँ तो आपको क्या कहना चाहिए कि ' भाई, चाचा को ज़रा बुख़ार आया और टप्प हो गए, और कुछ नहीं हुआ था'। सामने वाला पूछे उतना ही जवाब। हमें समझ लेना चाहिए कि विस्तार से कहने जाएँगे तो झंझट होगी। इसके बजाय, 'बुखार आया और टप्प' कहा कि पूरा निबेड़ा आ गया!

स्वजन की अंतिम समय में देखभाल

प्रश्नकर्ता : किसी स्वजन का अंत समय नज़दीक आया हो तो उनके प्रति आसपास के सगे-संबंधियों का बरताव कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : जिनका अंत समय नज़दीक आया है, उन्हें तो बहुत संभालना चाहिए। उनका प्रत्येक बोल संभाल लेना चाहिए। उन्हें नकारना नहीं चाहिए। सभी को उन्हें खुश रखना चाहिए और वे उल्टा बोलें तब भी आपको 'एक्सेप्ट' कर लेना चाहिए कि 'आप सही है!' वे कहें, 'दूध लाओ।' तो तुरंत दूध ले आना। तब वे कहें, 'यह तो पानी वाला है, दूसरा लाओ।' तो तुरंत दूसरा दूध गरम करके ले आना। फिर कहना कि, 'यह शुद्ध और अच्छा है।' यानी उन्हें जैसा अनुकूल आए वैसा करना चाहिए। वैसा सब बोलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यानी इसमें सही-गलत का झंझट नहीं करना चाहिए?

दादाश्री : यह, सही-गलत तो दुनिया में होता ही नहीं है। उन्हें पसंद आया कि बस, उसी तरह सब करते रहना चाहिए। उन्हें अनुकूल आए उस तरह से व्यवहार करना चाहिए। छोटे बच्चे के साथ हम किस तरह बर्ताव करते हैं? बच्चा काँच का प्याला फोड़ दे तो क्या हम उसे डाँटते हैं? दो साल का बच्चा हो उसे कुछ कहते हैं कि 'क्यों फोड़ दिया या ऐसा कुछ भी?' जिस तरह बच्चे के साथ बर्ताव करते हैं, उसी तरह उनके साथ बर्ताव करना चाहिए।

अंतिम पल में धर्मध्यान

प्रश्नकर्ता : अंतिम घंटों में कुछ लामाओं को किसी प्रकार की क्रियाएँ करवाते हैं। जब आदमी मृत्यु-शय्या पर होता है, तब तिब्बती लामाओं में, ऐसा कहा जाता है कि वे लोग उसकी आत्मा से कहते हैं कि 'तू इस प्रकार जा' अथवा तो अपने में जो गीता-पाठ करवाते हैं, या अपने में अच्छे शब्द कुछ उसे सुनाते हैं। अंतिम घंटों में ऐसा करने से क्या उन पर कुछ असर होता है?

दादाश्री : कुछ नहीं होता। बारह महीनों के बहीखाते आप लिखते हो, तब धनतेरस से आप बड़ी मुश्किल से नफा करो और घाटा निकाल दो तो चलेगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं चलेगा।

दादाश्री : क्यों ऐसा?

प्रश्नकर्ता : वह तो सारे साल का ही आता है न!

दादाश्री : उसी प्रकार वह सारी ज़िंदगी का लेखा-जोखा आता है। ये तो, लोग ठगते हैं। लोगों को मूर्ख बनाते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, मनुष्य की अंतिम अवस्था हो, जागृत अवस्था हो, अब उस समय कोई उसे गीता का पाठ सुनाए अथवा किसी दूसरे शास्त्र की बात सुनाए, उसे कानों में कुछ कहे...

दादाश्री : वह खुद कहता हो तो, उसकी इच्छा हो तो सुनाना चाहिए।

मर्सी किलिंग

प्रश्नकर्ता : जो भारी पीड़ा सहता हो उसे पीड़ा सहने दें, और यदि उसे मार डालें तो फिर उसका अगले जन्म में पीड़ा सहना शेष रहेगा, यह बात ठीक नहीं लगती। वह भारी पीड़ा सहता हो तो उसका अंत लाना ही चाहिए, उसमें क्या गलत है?

दादाश्री : ऐसा किसी को अधिकार ही नहीं है। हमें इलाज करवाने का अधिकार है, सेवा करने का अधिकार है, परंतु किसी को मारने का अधिकार ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो उसमें हमारा क्या भला हुआ?

दादाश्री : तो मारने से क्या भला हुआ? आप उस पीड़ाग्रस्त को मार डालो तो आपका मनुष्यत्व चला जाता है और वह तरीका मानवता के सिद्धांत से बाहर है, मानवता के विरुद्ध है।

साथ, स्मशान तक ही

यह जो तकिया होता है तो उसकी खोल बदलती रहती है, लेकिन

तकिया वही का वही। खोल फट जाती है और बदलती रहती है, उसी प्रकार यह खोल भी बदलती रहेगी।

वर्ना यह जगत् पोलम्पोल है। फिर भी व्यवहार से नहीं बोले तो उसके मन में दु:ख होगा, लेकिन स्मशान में उसके साथ जाकर कोई भी चिता में नहीं गिरा है। घर के सभी लोग वापस आते हैं। सभी समझदार हैं। उसकी माँ हो तो वह भी रोती-रोती वापस आती है।

प्रश्नकर्ता : फिर उसके नाम से छाती कूटती है कि कुछ भी रखकर नहीं गए, यदि दो लाख रुपये रखकर गए होते तो कुछ नहीं बोलती।

दादाश्री : हाँ, ऐसा है। ये तो नहीं रख गया इसलिए रोते हैं कि, 'मरता गया और मारता गया।' अंदर-अंदर ऐसा भी बोलते हैं! 'कुछ भी छोड़कर नहीं गया और हमें मारता गया!' अब उसने नहीं रखा, उसमें उसकी पत्नी का नसीब खराब था इसलिए नहीं रखा, लेकिन मृत व्यक्ति के लिए गालियाँ खाना लिखा था तो इतनी-इतनी सुनाते हैं!

अब लोग जब स्मशान में जाते हैं तो वापस नहीं आते न? या वे सभी वापस आ जाते हैं? यानी यह तो एक प्रकार का फज़ीता है! और नहीं रोए तो भी दु:ख और रोए तो भी दु:ख! यदि बहुत रोए तो लोग कहते हैं कि, 'क्या लोगों के वहाँ नहीं मर जाते कि आप इतना रो रहे हो? कैसे घनचक्कर हो?' और नहीं रोए तो कहेंगे कि, 'आप पत्थर जैसे हो, हृदय पत्थर जैसा है आपका!' यानी किस ओर चलें, वही मुश्किल! 'सबकुछ तरीके से होना चाहिए,' ऐसा कहेंगे।

वहाँ पर स्मशान में जलाएँगे भी सही और पास के होटल में बैठे-बैठे चाय-नाश्ता भी करेंगे। इस तरह नाश्ता करते हैं न लोग?

प्रश्नकर्ता : अरे, नाश्ता लेकर ही जाते हैं न!

दादाश्री : ऐसा! क्या बात कर रहे हो? यानी यह जगत् तो सारा ऐसा है! ऐसे जगत् में किस तरह रास आए?

'आने-जाने' का संबंध रखते हैं लेकिन सिर पर नहीं लेते। आप लेते हो सिर पर अब? सिर पर लेते हो? पत्नी का या अन्य किसी का भी नहीं?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : क्या बात कर रहे हो?! जबकि वह तो पत्नी को बगल में बिठाते रहते हैं। कहेंगे कि 'तेरे बिना मुझे अच्छा नहीं लगता' लेकिन स्मशान में कोई साथ नहीं जाता। जाता है कोई?

मृत्युतिथि के समय

प्रश्नकर्ता : परिवार में किसी की तिथि आए, तो उस दिन परिवारजनों को क्या करना चाहिए?

दादाश्री : भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए कि उसका भला हो।

फिर ठिकाना मिलता नहीं

प्रश्नकर्ता : किसी की मृत्यु हो जाए और हमें जानना हो कि वह व्यक्ति अब कहाँ है तो वह कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : ऐसा तो अमुक ज्ञान के बिना नहीं दिखाई देता न! अमुक ज्ञान चाहिए उसके लिए। और जान ले फिर भी उसका कोई अर्थ नहीं है। पर हम भावना करें तो अवश्य पहुँचती है भावना। हम याद करें, भावना करें तो पहुँचती है। वह तो, ज्ञान के बिना दूसरा कुछ पता नहीं चलता न!

तुझे किसी व्यक्ति का पता लगाना है? कोई गया है तेरे खानदान में से?

प्रश्नकर्ता : मेरा सगा भाई ही अभी इक्सपायर हो गया?

दादाश्री : वह तो तुझे याद नहीं करता लेकिन तू याद किया करता

है? यह इक्सपायर होना मतलब क्या? पता है? बहीखाते का हिसाब पूरा होना, वह। अत: हमें क्या करना चाहिए? हमें यदि वह बहुत याद आए तो वीतराग भगवान से कहना कि 'उसे शांति दीजिए'। याद आए तो उसे शांति मिले, ऐसा कहना। और हम क्या कर सकते हैं?

अल्लाह की अमानत

आपको जो भी पूछना हो वह पूछो। अल्लाह के पास पहुँचने में यदि कोई अड़चन आए तो वह हमसे पूछो। हम आपकी वह अड़चन दूर कर देंगे।

प्रश्नकर्ता : मेरे बेटे की दुर्घटना में मृत्यु हो गई, तो उस दुर्घटना का कारण क्या था?

दादाश्री : इस जगत् में जो कुछ आँखों से देखाई देता है, कानों से सुनाई देता है, वह सब 'रिलेटिव करेक्ट' है, वास्तव में सच नहीं है वह बात! यह देह भी अपनी नहीं है तो बेटा अपना कैसे हो सकता है? यह तो व्यवहार से, लोकव्यवहार से अपना बेटा माना जाता है। वास्तव में वह अपना बेटा नहीं है। वास्तव में तो यह देह भी अपनी नहीं है। यानी कि जो अपने पास रहे, उतना ही अपना और बाकी का सब पराया है। इसलिए यदि बेटे को खुद का बेटा मानते रहोगे तो परेशानी होगी और अशांति होगी! वह बेटा अब गया, खुदा की इच्छा यही है तो उसे अब 'लेट गो' कर लो।

प्रश्नकर्ता : वह तो ठीक है, अल्लाह की अमानत अपने पास थी, वह ले ली!

दादाश्री : हाँ, बस। यह पूरा बाग़ अल्लाह का ही है।

प्रश्नकर्ता : उसकी मृत्यु इस प्रकार से हुई, उसमें क्या हमारे कुकर्म होंगे?

दादाश्री : हाँ, बेटे के भी कुकर्म और आपके भी कुकर्म। अच्छे कर्म हों तो उसका बदला अच्छा मिलता है।

पहुँचे मात्र भाव के स्पंदन

बेटे के मर जाने के बाद उसकी चिंता करने से उसे दुःख होता है। लोग अज्ञानता से ऐसा सब करते हैं, इसलिए आपको 'जैसा है वैसा' जानकर शांतिपूर्वक रहना चाहिए। बेकार झंझट करने का क्या मतलब है फिर? जहाँ कभी कोई बेटा नहीं मरा हो, ऐसा घर कहीं भी होगा ही नहीं! ये तो संसार के ऋणानुबंध हैं, लेन-देन का हिसाब हैं। हमारे यहाँ भी बेटा-बेटी थे लेकिन वे मर गए। मेहमान आए थे, वे मेहमान चले गए। वह अपना सामान है ही कहाँ? क्या आपको भी नहीं जाना है? आपको भी जाना है वहाँ, यह क्या तूफान है फिर? यानी जो जीवित हैं उसे शांति दो। गया वह तो गया, उसे याद करना भी छोड़ दो। जो यहाँ जीवित हैं, जितने आश्रित हैं उन्हें शांति दो। उतना अपना फर्ज़ है। यह तो जो जा चुके हैं उन्हें याद कर रहे हो और इन्हें शांति नहीं दे सकते, यह कैसा? इस तरह फर्ज़ चूक जाते हो सारा। ऐसा लगता है क्या? गया वह तो गया। जेब में से लाख रुपये गिर गए और फिर नहीं मिले तो क्या करना चाहिए? सिर फोड़ना चाहिए?

यह अपने हाथ का खेल नहीं है और उस बेचारे को वहाँ दुःख होता है। यदि हम यहाँ पर दुःखी होते हैं तो उसका असर उसे वहाँ पर पहुँचता है। तो उसे भी सुखी नहीं रहने देते और हम भी सुखी नहीं रहते। इसी वजह से शास्त्रकारों ने कहा है कि, 'जाने के बाद दुःखी मत होना'। इसलिए लोगों ने क्या कहा कि गरुड़ पुराण रखो, फलाना रखो, पूजा करो और मन में से भूल जाओ। आपने ऐसा कुछ किया था? फिर भी नहीं भूले?

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसे भूल नहीं पाता। बाप और बेटे के बीच व्यवहार ऐसा था कि अच्छा चल रहा था। इसलिए वह भुलाया जा सके ऐसा नहीं है।

दादाश्री : हाँ, भुलाया जा सके ऐसा नहीं है। लेकिन आप नहीं भूलोगे तो आपको उसका दुःख रहेगा और उसे वहाँ पर दुःख होगा। ऐसा अपने मन में उसके लिए दुःख मनाना, वह एक बाप के तौर पर आपके लिए काम का नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उसे किस तरह दुःख होगा?

दादाश्री : आप यहाँ पर दुःख मनाओगे तो उसका असर वहाँ पहुँचे बगैर रहेगा ही नहीं। इस जगत् में तो सबकुछ फोन की तरह है, टेलीविज़न जैसा है यह जगत् और हम यहाँ पर *उपाधि* करें तो वह वापस आ जाएगा क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : किसी भी तरह से नहीं आएगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : दुःखी रहें तो वह उसे पहुँचता है और उसके नाम पर हम धर्म भक्ति करें तो वह भी उसे पहुँचती है और उसे शांति होती है। उसे शांति पहुँचाने की बात आपको कैसी लगती है? और उसे शांति पहुँचाना आपका फर्ज़ है न? इसलिए ऐसा कुछ करो न कि उसे अच्छा लगे। एक दिन स्कूल के बच्चों को ज़रा पेड़े खिला दो, ऐसा कुछ करो।

जब भी आपको बेटे की याद आए, तब उसके आत्मा का कल्याण हो, ऐसा कहना। 'कृपालुदेव' का नाम लेना। 'दादा भगवान' कहोगे तो भी काम होगा, क्योंकि 'दादा भगवान' और 'कृपालुदेव' आत्म स्वरूप से एक ही हैं। देह से अलग दिखते हैं, आँखों से अलग दिखते हैं लेकिन 'वस्तु' के रूप में एक ही हैं। यानी महावीर भगवान का नाम लोगे तब भी वही है। उसके आत्मा का कल्याण हो, निरंतर ऐसी ही भावना करना। जिनके साथ आप निरंतर रहे, साथ में खाया-पीया, तो उसका किस प्रकार

से कल्याण हो आपको ऐसी भावना करनी चाहिए। हम लोग औरों के लिए अच्छी भावना करते हैं, तो अपने खुद के घर के व्यक्ति, उनके लिए क्या कुछ नहीं करेंगे?

रोते हैं, स्व के लिए या जाने वाले के लिए?

प्रश्नकर्ता : हमारे लोगों को पूर्वजन्म की समझ है, फिर भी घर में कोई मर जाए, उस समय अपने लोग रोते क्यों है?

दादाश्री : वे तो अपने-अपने स्वार्थ के लिए रोते हैं। अगर बहुत नज़दीकी रिश्तेदार हों तो वे वास्तव में रोते हैं, पर दूसरे सभी... जो सच में रोते हैं न, वे तो अपने रिश्तेदारों को याद करके रोते हैं। यह भी आश्चर्य है न! ये लोग भूतकाल को वर्तमानकाल में ले आते हैं। इन भारतियों को भी धन्य है न! भूतकाल को वर्तमानकाल में ले आते हैं और वह प्रयोग हमें दिखाते हैं!

परिणाम कल्पांत के...

यदि एक बार कल्पांत किया तो 'कल्प' के अंत तक भटकना पड़ेगा, इससे पूरे कल्प के अंत तक भटकना पड़ेगा।

वह 'लीकेज' नहीं करते

प्रश्नकर्ता : नरसिंह मेहता उनकी पत्नी की मृत्यु होने पर '*भलु थयुं भांगी जंजाळ*' (भला हुआ छूटा जंजाल), ऐसा बोलें तो वह क्या कहलाएगा?

दादाश्री : पर वे बावले होकर बोल उठे कि '*भलु थयुं भांगी जंजाळ*'। यह बात मन में रखने की होती है कि 'जंजाल छूट गया।' वह मन में से 'लीकेज' नहीं होना चाहिए। लेकिन यह तो मन में से 'लीकेज' होकर बाहर निकल गया। मन में रखने की चीज़ ज़ाहिर कर दें तो ऐसे मनुष्य बावले कहलाते हैं।

ज्ञानी होते हैं बहुत विवेकी

और 'ज्ञानी' बावले नहीं होते। ज्ञानी बहुत समझदार होते हैं। मन में सबकुछ होता है कि 'भला हुआ छूटा जंजाल' पर बाहर क्या कहते हैं? अरेरे, बहुत बुरा हुआ। यह तो मैं अकेला अब क्या करूँगा?! ऐसा भी कहते हैं। नाटक करते हैं। जगत् तो स्वयं नाटक ही है। इसलिए अंदर से जानो कि 'भला हुआ छूटा जंजाल' पर विवेक में रहना चाहिए। 'भला हुआ छूटा जंजाल, सुख से भजेंगे श्री गोपाल' ऐसा नहीं बोलते। ऐसा अविवेक तो कोई बाहर वाला भी नहीं करता। दुश्मन हो, फिर भी विवेक से बैठता है, मुँह शोक वाला करके बैठता है! हमें शोक या और कुछ नहीं होता, फिर भी बाथरुम में जाकर पानी लगाकर, आकर आराम से बैठते हैं। यह अभिनय है। द वर्ल्ड इज़ द ड्रामा इटसेल्फ, (संसार स्वयं एक नाटक है) आपको सिर्फ नाटक ही करना है, अभिनय ही करना है, लेकिन अभिनय 'सिन्सियर्ली' करना है।

जीव भटके तेरह दिन?

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के बाद तेरह दिन का रेस्टहाउस होता है, ऐसा कहा जाता है?

दादाश्री : तेरह दिन का तो इन ब्राह्मणों को होता है। मरने वाले को क्या? ब्राह्मण ऐसा कहते हैं कि रेस्टहाउस है। ये घर के ऊपर बैठा रहेगा, अँगूठे जितना और देखता रहेगा। अरे, भाई क्यों देखता रहेगा? पर देखो उनका तूफान, देखो तूफान! कहते हैं, इतना अँगूठे जितना ही है और खपरैल पर बैठा रहता है। और अपने लोग सच मानते हैं, और यदि सच नहीं मानें तो तेरही करते ही नहीं ये लोग। वर्ना ये लोग तेरही आदि कुछ भी नहीं करते।

प्रश्नकर्ता : गरुड़ पुराण में लिखा है कि अँगूठे जितना ही आत्मा है।

दादाश्री : हाँ, उसका नाम ही गरुड़ पुराण है न! *पुराणा* (पुराना)

कहलाता है। अँगूठे जितना आत्मा, इसलिए प्राप्ति ही नहीं होती न, दिन ही नहीं फिरते! एवरी डे फ्राइडे! करने गए साइन्टिफिक, हेतु साइन्टिफिक था पर थिन्किंग सब बिगड़ गई। ये लोग उस नाम पर क्रियाएँ करते और क्रियाएँ करें उससे पहले ब्राह्मण को दान देते थे। तब दान करने योग्य ही ब्राह्मण थे। वे ब्राह्मण को दान देते तो पुण्य बंधता था। अब तो यह सब जर्जरित हो गया है। ब्राह्मण यहाँ से पलंग ले जाते हैं, उसका सौदा पहले से किया होता है कि बाईस रुपये में तुझे दूँगा। गद्दे का सौदा किया होता है, चद्दर का सौदा किया होता है। हम दूसरा सब देते हैं, कपड़े साधन आदि सब, वे भी बेच देते हैं सारा। इस तरह से सब आत्मा को पहुँचेगा लोगों ने ऐसा कैसे मान लिया?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, अब तो कितने ही लोग ऐसा करते हैं कि 'ब्राह्मण को कह देते हैं कि तू सब ले आना और हम निर्धारित पैसे दे देंगे'।

दादाश्री : अभी है ऐसा नहीं है, कितने ही वर्षों से करते हैं। निर्धारित पैसे दे देंगे, तू ले आना। और वह दूसरे की दी हुई खाट होती है ले आता है! बोलो अब! फिर भी लोगों को मानने में नहीं आता, फिर भी गाड़ी तो वैसे चलती ही रहती है। जैन ऐसा नहीं करते। जैन बड़े पक्के होते हैं, ऐसा-वैसा नहीं करते। ऐसा-वैसा कुछ है भी नहीं। यहाँ से आत्मा निकला कि सीधे उसकी गति में चला जाता है, योनि प्राप्त हो जाती है।

मरने वाले को नहीं कुछ लेना-देना

प्रश्नकर्ता : मरने वाले के पीछे कुछ भजन-कीर्तन करना या नहीं? उससे क्या फ़ायदा होता है?

दादाश्री : मरने वाले को कोई लेना-देना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर ये अपनी धार्मिक विधियाँ हैं, मृत्यु के अवसर पर जो सभी विधियाँ की जाती हैं, वे सही हैं या नहीं?

दादाश्री : उसमें एक अक्षर भी सच्चा नहीं है। अब वे गए सो गए। लोग अपने आप करते हैं और यदि कोई कहें कि आप अपने लिए करो न! तो कहते हैं, 'नहीं भाई, फुरसत नहीं है मुझे'। यदि पिता जी के लिए करने को कहें, तब भी नहीं करें ऐसे हैं ये। लेकिन पड़ोसी कहते हैं, 'अरे भाई, तेरे बाप का कर न, तेरे बाप का कर!' वह तो पड़ोसी ठोक-पीटकर करवाते हैं!

प्रश्नकर्ता : तो यह गरुड़ पुराण बिठाते हैं, वह क्या है?

दादाश्री : वह तो, गरुड़ पुराण तो जो रोते हैं न, वे गरुड़ पुराण में जाते हैं, यानी फिर शांति करने के सभी रास्ते हैं ये।

वह सब वाह-वाह के लिए

प्रश्नकर्ता : यह मृत्यु के बाद बारहवाँ करते हैं, तेरही करते हैं, बरतन बाँटते हैं, भोजन करवाते हैं, उसका महत्व कितना है?

दादाश्री : वह अनिवार्य चीज़ नहीं है। वह तो पीछे वाह-वाह के लिए करवाते हैं। और यदि खर्च नहीं करेगा न उसका लोभ बढ़ता जाएगा। यदि दो हज़ार रुपये दिलवाए हों तो खाता-पीता नहीं है और दो हज़ार के पीछे पैसे जोड़ता रहता है। इसलिए ऐसा खर्च करेगा तो फिर मन शुद्ध होगा और लोभ नहीं बढ़ेगा। परंतु वह अनिवार्य चीज़ नहीं है। पैसे हो तो करना, नहीं हो तो कोई बात नहीं।

श्राद्ध की सच्ची समझ

प्रश्नकर्ता : ये श्राद्ध में तो पितृओं को जो आह्वान होता है, वह ठीक है? उस समय श्राद्ध पक्ष में पितृ आते हैं? और कौए को भोजन खिलाते हैं, वह क्या है?

दादाश्री : ऐसा है न, यदि बेटे के साथ संबंध होगा तो आएगा। सारा संबंध पूरा होता है, तब तो देह छूटता है। किसी प्रकार का घर

वालों के साथ संबंध नहीं रहा, इसलिए यह देह छूट जाता है। फिर कोई मिलता नहीं है। फिर नया संबंध बंधा हो, तो फिर जन्म होता है वहाँ, बाकी कोई आता-करता नहीं है। पितृ किसे कहेंगे? बेटे को कहेंगे या बाप को कहेंगे? बेटा पितृ होने वाला है और बाप भी पितृ होने वाला है और दादा भी पितृ होना वाला है, किसे कहेंगे पितृ?

प्रश्नकर्ता : याद करने लिए ही ये क्रियाएँ रखी हैं, ऐसा न?

दादाश्री : नहीं, याद करने के लिए भी नहीं। यह तो, अपने लोग मृतक व्यक्ति के पीछे धर्म के नाम पर चार आने भी खर्च करें, ऐसे नहीं थे। इसलिए फिर उन्हें समझाया कि 'भाई, आपके पिताश्री मर गए हैं तो कुछ खर्च करो, कुछ ऐसा करो, वैसा करो।' तब जाकर आपके पिताश्री को पहुँचेगा। तब लोग भी उसे डाँटकर कहते हैं कि बाप के लिए कुछ कर न! श्राद्ध कर न! कुछ अच्छा कर न! तो ऐसे करके दो सौ-चार सौ, जो भी खर्च करवाते हैं धर्म के नाम पर, उतना उसका फल मिलता है। बाप के नाम पर करता है और बाद में फल मिलता है। यदि बाप का नाम नहीं दिया होता तो ये लोग चार आने भी खर्च नहीं करते। अत: अंधश्रद्धा पर यह सब चल रहा है। आपकी समझ में आया? नहीं समझे?

ये व्रत-उपवास करते हैं, वह सब आयुर्वेद के हेतु से है, आयुर्वेद के लिए। ये सब व्रत-उपवास आदि करते हैं, उसमें आयुर्वेद के हेतु से क्या फायदा होता है, उसके लिए प्रबंध किया है यह सब। पहले के लोगों ने अच्छा प्रबंध किया है। इन मूर्ख लोगों को भी फायदा होगा, इसलिए अष्टमी, एकादशी, पंचमी, ऐसा सब किया है और ये श्राद्ध करते हैं न! अत: श्राद्ध, वह तो बहुत अच्छे हेतु के लिए किया है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, श्राद्ध में कौओं को भोजन खिलाते हैं, उसका क्या तात्पर्य है? क्या वह अज्ञानता कहलाती है?

दादाश्री : नहीं, अज्ञानता नहीं है। यह एक तरह से लोगों ने सिखाया

है कि उस प्रकार से श्राद्धकर्म होता है। वह अपने यहाँ तो श्राद्ध करने का तो बड़ा इतिहास है। इसका क्या कारण था? श्राद्ध कब से शुरू होते हैं कि भादों सुद पूनम से लेकर भादों वद अमावस्या तक श्राद्धपक्ष कहलाता है। सोलह दिन के श्राद्ध! अब यह श्राद्ध का किसलिए इन लोगों ने डाला? बहुत बुद्धिमान प्रजा थी! इसलिए श्राद्ध जो डाले हैं, वह तो सब वैज्ञानिक तरीका है। हमारे इन्डिया में आज से कुछ साल पहले तक गाँवों में हर एक घर में एक खटिया तो बिछी रहती थी, एक-दो लोग तो मलेरिया के कारण खाट में पड़े होते थे। कौन से महीने में? तो कहें, भादों महीने में। अत: हम गाँव में जाएँ, तो हर एक घर के बाहर एकाध खटिया पड़ी रहती और उसमें मरीज़ सोया रहता, ओढ़कर। बुख़ार होता, मलेरिया के बुख़ार से ग्रस्त। भादों के महीने में मच्छर बहुत होते थे, इसलिए मलेरिया बहुत फैलता था, यानी मलेरिया पित्त का ज्वर कहलाता है। वह वायु या कफ का ज्वर नहीं है। पित्त का ज्वर, तो इतना अधिक पित्त बढ़ जाता है। बरसात के दिन और पित्तज्वर और फिर मच्छर काटते हैं। जिसे पित्त ज़्यादा होता है उसे काटते हैं। इसलिए मनुष्यों ने, इन खोजकर्त्ताओं ने यह खोज की थी कि हिन्दुस्तान में कोई रास्ता निकालो, नहीं तो आबादी आधी हो जाएगी। अभी तो ये मच्छर कम हो गए हैं, नहीं तो मनुष्य जीवित नहीं रहते। इसलिए पित्त के बुख़ार को शमन करने के लिए, इस तरह से शमन हेतु खोज की थी कि ये लोग दूधपाक या खीर, दूध और शक्कर आदि खाएँगे तो पित्त शमेगा और मलेरिया से कुछ छुटकारा मिलेगा। अब ये लोग घर का दूध हो, फिर भी खीर-बीर बनाते नहीं थे, दूधपाक खाते नहीं थे ऐसे ये लोग! बहुत नॉर्मल न(!), अत: क्या होगा वह आप जानते हो? अब ये दूधपाक रोज़ खाएँ किस तरह?

अब बाप को तो एक अक्षर भी नहीं पहुँचता। पर इन लोगों ने खोज की थी कि ये हिन्दुस्तान के लोग चार आने भी धर्म करें, ऐसे नहीं हैं। ऐसे लोभी हैं कि दो आने भी धर्म नहीं करेंगे। इसलिए ऐसे उल्टे कान पकड़वाए कि 'तेरे बाप का श्राद्ध तो कर!' ऐसा सब कहने आते हैं न!

अत: इस प्रकार श्राद्ध का नाम डाल दिया। इसलिए लोगों ने फिर शुरू कर दिया कि बाप का श्राद्ध तो करना पड़ेगा न! और मुझ जैसा कोई अडियल हो और श्राद्ध न करता हो तो क्या कहते हैं? 'बाप का श्राद्ध भी नहीं करता है।' आस-पास वाले किच-किच करते हैं, इसलिए फिर श्राद्ध कर देता है। तब फिर भोजन करवा देता है।

तब पूनम के दिन से खीर खाने को मिलती है और पंद्रह दिनों तक खीर मिलती रहती है। क्योंकि आज मेरे यहाँ, कल आपके यहाँ और लोगों को भी यह माफिक आ गया कि, 'होगा, तभी बारी-बारी से खाना है न! ठगे नहीं जाएँगे और फिर खाना भी कौए को डालना है।' इस प्रकार शोध की थी। उससे पित्त सारा शम जाता है इसलिए इन लोगों ने यह व्यवस्था की थी। इसलिए हमारे लोग उस समय क्या कहते थे कि सोलह श्राद्धों पश्चात् जीवित रहा इसलिए नवरात्रि में आ पाया!

बिना हस्ताक्षर मरण भी नहीं

लेकिन कुदरत का नियम ऐसा है कि किसी भी इंसान को यहाँ से नहीं ले जा सकते, मरने वाले के हस्ताक्षर के बिना उसे यहाँ से नहीं ले जा सकते। लोग हस्ताक्षर करते होंगे क्या? ऐसा कहते हैं न कि, 'भगवान, यहाँ से चला जाऊँ तो अच्छा'। अब वह ऐसा क्यों बोलता है? क्या आप वह जानते हो? भीतर कोई ऐसा दु:ख हो जाए तो फिर दु:ख के मारे बोल देता है कि, 'अब यह देह छूट जाए तो अच्छा।' उस घड़ी हस्ताक्षर करवा लेता है।

उससे पहले करना 'मुझे' याद

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा सुना है कि आत्महत्या के बाद सात जन्मों तक वैसा ही होता है। यह बात सच है?

दादाश्री : जो संस्कार पड़ते हैं, वे सात-आठ जन्मों के बाद जाते हैं, यानी ऐसा कोई गलत संस्कार मत पड़ने देना। गलत संस्कारों से दूर भागना।

हाँ, यहाँ चाहे जितना दु:ख हो, उसे सहन कर लेना लेकिन गोली मत मारना। आत्महत्या मत करना। बड़ौदा शहर में आज से कुछ साल पहले सभी से कह दिया था कि जब आत्महत्या करने का मन हो, तब मुझे याद करना और मेरे पास आना। ऐसे लोग होते हैं न, जोखिम वाले लोग, उनसे कह रखा था। वे फिर मेरे पास आते थे और उन्हें समझा देता था। दूसरे दिन से आत्महत्या के विचार बंद हो जाते थे। 1951 के बाद सभी को खबर दे दी कि जिस किसी को आत्महत्या करनी हो तो मुझसे मिलकर जाए और फिर करे। कोई आए कि मुझे आत्महत्या करनी है तो उसे मैं समझा देता हूँ, आसपास के 'कॉज़ेज़', 'सर्कल' आत्महत्या करने जैसा है या नहीं, सबकुछ उसे समझा देता हूँ और उसे वापस मोड़ लेता हूँ।

आत्महत्या का फल

प्रश्नकर्ता : कोई व्यक्ति आत्महत्या करे तो उसकी क्या गति होती है? भूतप्रेत बनता है?

दादाश्री : आत्महत्या करने से तो प्रेत बनते हैं और प्रेत बनकर तो भटकना पड़ेगा। आत्महत्या करके बल्कि परेशानियाँ मोल लेता है। एक बार आत्महत्या करे तो उसके बाद कितने ही जन्मों तक उसके प्रतिस्पंदन आते रहते हैं! और ये जो आत्महत्या करते हैं न वे कोई नए लोग नहीं हैं, पिछले जन्म में आत्महत्या की हुई होती है उसके प्रतिस्पंदन के कारण करते हैं। आज आत्महत्या करते हैं, वह तो पहले की हुई आत्महत्या के कर्म का फल आता है। इसलिए खुद अपने आप ही आत्महत्या करता है। ऐसे प्रतिस्पंदन डले हुए होते हैं कि वह वैसा ही करता हुआ आता है। इसलिए खुद अपने आप ही आत्महत्या करता है और आत्महत्या के बाद वह जीव अवगति वाला बन सकता है। अवगति वाला जीव अर्थात् बिना देह के भटकता है। भूत बनना आसान नहीं है। भूत तो देवगति का जन्म है, वह आसान चीज़ नहीं है। भूत तो, अगर यहाँ पर कठोर तप किए हों, अज्ञान तप किए हों तब भूत बनता है, जबकि प्रेत अलग चीज़ है।

विकल्प बिना जीया नहीं जाता

प्रश्नकर्ता : आत्महत्या के विचार क्यों आते होंगे?

दादाश्री : वह तो अंदर विकल्प खत्म हो जाते हैं, इसलिए। यह तो, विकल्प के आधार पर जी पाते हैं। विकल्प खत्म हो जाएँ, बाद में अब क्या करना, उसका कुछ 'दर्शन' नहीं दिखता। इसलिए फिर आत्महत्या करने के बारे में सोचता है। यानी ये विकल्प भी काम के ही हैं।

जब सहज रूप से विचार बंद हो जाएँ, तब ये सब ऊँचे विचार आते हैं। जब विकल्प बंद हो जाएँ, तब सहज रूप से जो विचार आ रहे थे, वे भी बंद हो जाते हैं। घोर अँधेरा हो जाता है, फिर कुछ भी दिखाई नहीं देता! संकल्प अर्थात् 'मेरा' और विकल्प अर्थात् 'मैं,' जब वे दोनों बंद हो जाएँ, तब मर जाने के विचार आते हैं।

आत्महत्या के कारण

प्रश्नकर्ता : वह जो उसे वृत्ति हुई, आत्महत्या करने की उसका रूट (मूल) क्या है?

दादाश्री : आत्महत्या का रूट तो ऐसा होता है कि उसने किसी जन्म में आत्महत्या की हो तो उसके प्रतिघोष सात जन्मों तक रहा करते हैं। जैसे एक गेंद डालें न हम, तीन फीट ऊपर से डालें तो अपने आप दूसरी बार ढाई फीट उछलकर वापस गिरेगी। फिर एक फुट उछलकर वापस गिरती है, ऐसा होता है या नहीं? तीन फीट पूरा नहीं उछलती लेकिन अपने स्वभाव से ढाई फीट उछलकर वापस गिरती है, तीसरी बार दो फीट उछलकर वापस गिरती है, चौथी बार डेढ़ फीट उछलकर वापस गीरती है। फिर एक फुट उछलकर गिरती है। ऐसा उसका गति का नियम होता है। ऐसे कुदरत के भी नियम होते हैं। यह जो आत्महत्या करते हैं न तो सात जन्मों तक आत्महत्या करनी ही पड़ती है। अब उसमें कम-ज़्यादा परिणाम से आत्महत्या, हमें पूर्ण ही दिखाई देती है, लेकिन परिणाम कम तीव्रता वाले होते हैं, कम होते-होते परिणाम खत्म हो जाते हैं।

अंतिम पलों में

मरते समय सारी ज़िंदगी में जो किया हो, उसका सार (हिसाब) आता है। वह सार पौने घंटे तक पढ़ता रहे फिर देह बंध जाता है। फलत: दो पैरों में से चार पैर हो जाते हैं। यहाँ रोटी खाते-खाते वहाँ डंठल खाने चला जाता है! इस कलियुग का माहात्म्य ऐसा है। अत: फिर से यह मनुष्यत्व मिलना मुश्किल है, ऐसा यह कलियुग का काल...

प्रश्नकर्ता : अंतिम समय का किसे पता है? कहीं कान बंद हो गए तो?

दादाश्री : अंतिम समय में तो आज जो आपके बहीखाते में जमा है न, वह आता है। मृत्यु समय का घंटा, जो गुणस्थानक आता है न, वह सार है और वह लेखा-जोखा सिर्फ सारी ज़िंदगी का नहीं, किन्तु पहले जो जन्म लिया था और अभी का, उस बीच के भाग का लेखा-जोखा है। वह मृत्यु की घड़ी में हमारे लोग, कितने ही कान में बुलवाते हैं, 'बोलो राम, बोलो राम,' अरे! भाई, राम क्यों बुलवाता है? राम तो गए कब के!

लेकिन लोगों ने सिखलाया ऐसा, कि ऐसा कुछ करना। लेकिन वह तो अंदर पुण्य जागा हो न, तब एडजस्ट होता है। और वह तो लड़की को ब्याहने की चिंता में ही पड़ा होता है। ये तीन लड़कियाँ ब्याह दीं और यह चौथी रह गई। ये तीन ब्याह दीं और छोटी अकेली रह गई। कीमत लगाई कि वह आगे आकर खड़ी रहेगी। और (आगे) वह बचपन में अच्छा किया हुआ नहीं आएगा, बुढ़ापे में अच्छा किया हुआ आएगा।

कुदरत का कैसा सुंदर कानून

अत: यहाँ से जाता है, वह भी कुदरत का न्याय, ठीक है न! लेकिन वीतराग सावधान करते हैं कि भाई पचास साल हो गए अब सँभल जा!

यदि पचहत्तर वर्ष की आयु हो तो पचासवें वर्ष में पहली फोटो खिंचती है और साठ वर्ष का आयुष्य हो तो चालीसवें वर्ष में फोटो खिंचती है। यदि इक्यासी वर्ष का आयुष्य हो तो चौवनवें वर्ष में फोटो खिंच जाती है लेकिन तब तक इतना टाइम फ्री ऑफ कॉस्ट (मुफ्त) मिलता है, दो तिहाई हिस्सा फ्री में मिलता है और एक तिहाई भाग, उसकी फिर फोटो खिंचती रहती हैं। कानून अच्छा है या ज़ोर-ज़बरदस्ती वाला है? ज़ोर-ज़बरदस्ती वाला नहीं है न? न्यायसंगत है न? कहते हैं, दो तिहाई उछल-कूद की हो, उसकी हमें आपत्ति नहीं है लेकिन अब सीधा मर न!

क्षण-क्षण भाव मरण

प्रश्नकर्ता : देह की मृत्यु तो कहलाएगी न?

दादाश्री : अज्ञानी मनुष्यों का तो दो तरह का मरण होता है। रोज़ भाव मरण होता रहता है। क्षण-क्षण भाव मरण और फिर अंतत: देह की मृत्यु हो जाती है। लेकिन हररोज़ का मरण, रोज़ का रोना। क्षण-क्षण भाव मरण। इसलिए कृपालुदेव ने लिखा है न!

'क्षण-क्षण भयंकर भाव मरणे कां अहो राची रह्यो!'
(क्षण-क्षण भयंकर भाव मृत्यु, क्यों अरे प्रसन्न है!)

ये सभी जी रहे हैं, वे मरने के लिए या किसलिए जी रहे हैं?

समाधि मरण

इसलिए मृत्यु से कहें कि "तुझे जल्दी आना हो तो जल्दी आ, देर से आना हो तो देर से आ, मगर 'समाधि मरण' बनकर आना!"

समाधि मरण अर्थात् आत्मा के सिवाय और कुछ याद ही नहीं हो। निज स्वरूप शुद्धात्मा के अलावा दूसरी जगह चित्त ही नहीं हो, मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार कुछ भी डाँवाडोल नहीं हो! निरंतर समाधि! देह को *उपाधी* हो, फिर भी *उपाधी* छुए नहीं! देह तो *उपाधी* वाला है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : केवल *उपाधी* वाला ही नहीं, व्याधि वाला भी है या नहीं? ज्ञानी को *उपाधी* नहीं छूती। व्याधि हुई हो तो वह भी नहीं छूती। और अज्ञानी तो व्याधि नहीं हो तो उसे बुलाता है! समाधि मृत्यु अर्थात् 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान रहे! अपने कितने ही महात्माओं की मृत्यु हुई, उन सभी को 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान रहा करता था।

गति की निशानी

प्रश्नकर्ता : मृत्यु समय ऐसी कोई निशानी है कि पता चल सके कि इस जीव की गति अच्छी हुई या नहीं?

दादाश्री : उस समय यदि घर की ऐसी ही सब झंझट करता रहता है, 'मेरी बेटी की शादी हुई या नहीं? यह नहीं हुआ है', दुःखी होता रहता है तो समझना कि इसकी हो गई अधोगति। और यदि आत्मा में रहे अर्थात् भगवान में रहे तो अच्छी गति होगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि कुछ दिन बेहोश रहे तो?

दादाश्री : बेहोश रहे, फिर भी भीतर यदि ज्ञान में रहे तो चलेगा। यह ज्ञान लिया हुआ होना चाहिए। फिर बेहोश रहे तो भी चलेगा।

मृत्यु का भय

प्रश्नकर्ता : तो मृत्यु का भय क्यों रहता है सभी को?

दादाश्री : मृत्यु का भय तो अहंकार को रहता है, आत्मा को कुछ नहीं। अहंकार को भय रहता है कि 'मैं मर जाऊँगा, मैं मर जाऊँगा'।

उस दृष्टि से देखो तो सही

ऐसा है न, भगवान की दृष्टि से इस संसार में क्या चल रहा है? तो कहते हैं, 'उनकी दृष्टि से तो कोई मरता ही नहीं है'। भगवान की जो

दृष्टि है, वह दृष्टि यदि आपको प्राप्त हो जाए, एक दिन के लिए दें वे आपको, तो यहाँ चाहे जितने लोग मर जाएँ, फिर भी आपको असर नहीं होगा, क्योंकि भगवान की दृष्टि में कोई मरता ही नहीं है।

जीव तो मरण, शिव तो अमर

कभी न कभी सोल्युशन तो लाना पड़ेगा न? जीवन-मृत्यु का सोल्युशन नहीं लाना पड़ेगा? वास्तव में खुद मरता भी नहीं है और वास्तव में जीता भी नहीं है। यह तो मान्यता में ही भूल है कि स्वयं को जीव मान बैठा है। खुद का स्वरूप शिव है। खुद शिव है, लेकिन यह खुद की समझ में नहीं आता है और खुद को जीवस्वरूप मान बैठा है!

प्रश्नकर्ता : यदि ऐसा हर एक जीव समझ पाता तब तो यह दुनिया चलती ही नहीं न?

दादाश्री : हाँ, चलती ही नहीं न! लेकिन हर एक व्यक्ति के समझ में आए ऐसा है भी नहीं! यह तो सब पज़ल है। अत्यंत गुह्य, अत्यंत गुह्यतम। इस गुह्यतम के कारण ही यह सब ऐसा पोलम्पोल जगत् चला करता है।

जीए-मरे, वह कौन?

ये जन्म-मृत्यु आत्मा के नहीं हैं। आत्मा परमानेन्ट वस्तु है। ये जन्म-मृत्यु इगोइज़म, अहंकार के हैं। इगोइज़म जन्म पाता है और इगोइज़म मरता है। वास्तव में आत्मा खुद मरता ही नहीं। अहंकार ही जन्म लेता है और अहंकार ही मरता है।

मृत्यु समय पहले और पश्चात्...

आत्मा की स्थिति

जन्म-मरण क्या है?

प्रश्नकर्ता : जन्म-मरण क्या है?

दादाश्री : जन्म-मृत्यु तो होते हैं, हम देखते हैं कि उसमें क्या है, उसमें पूछने जैसा नहीं है। जन्म-मरण अर्थात् उसके कर्म का हिसाब पूरा हो गया, एक जन्म का जो हिसाब बांधा था, वह पूरा हो गया, इसलिए मरण हो जाता है।

मृत्यु क्या है?

प्रश्नकर्ता : मृत्यु क्या है?

दादाश्री : मृत्यु तो, ऐसा है न, यह क़मीज़ सिलवाई अर्थात् क़मीज़ का जन्म हुआ न, और जन्म हुआ इसलिए मृत्यु हुए बगैर रहेगी ही नहीं! किसी भी वस्तु का जन्म होता है तो उसकी मृत्यु अवश्य होती है। और आत्मा अजन्म-अमर है, उसकी मृत्यु ही नहीं होती। मतलब जितनी चीज़ें उत्पन्न होती हैं, उनकी मृत्यु अवश्य होती है। और मृत्यु है तो जन्म होगा। जन्म के साथ मृत्यु जोइन्ट हुई है। यदि जन्म है तो मृत्यु अवश्य है!

प्रश्नकर्ता : मृत्यु किसलिए है?

दादाश्री : मृत्यु तो ऐसा है न, इस देह का जन्म होना, वह एक संयोग है और उसका वियोग हुए बगैर रहेगा ही नहीं न! संयोग हमेशा वियोगी स्वभाव के ही होते हैं। जब हम स्कूल में पढ़ने गए थे, तब शुरुआत की थी या नहीं? बिगिनिंग? फिर एन्ड आया या नहीं आया? हर एक चीज़ बिगिनिंग और एन्ड वाली ही होती है। यहाँ पर इन सभी चीज़ों का बिगिनिंग और एन्ड होता है। नहीं समझ में आया तुझे?

प्रश्नकर्ता : समझ में आया न!

दादाश्री : ये सभी चीज़ें बिगिनिंग-एन्डवाली, परंतु बिगिनिंग और एन्ड को जो जानता है, वह जानने वाला कौन है?

सभी चीज़ें बिगिनिंग व एन्ड वाली हैं, वे टेम्परेरी (अस्थायी) चीज़ें हैं। जिसका बिगिनिंग होता है, उसका एन्ड होता है। बिगिनिंग हो उसका

एन्ड होता ही है, अवश्य। वे सभी टेम्परेरी चीजें हैं, मगर टेम्परेरी को जानने वाला कौन है? तू परमानेन्ट है, क्योंकि तू इन चीज़ों को टेम्परेरी कहता है, इसलिए तू परमानेन्ट है। यदि सभी चीज़ें टेम्परेरी होती तो फिर टेम्परेरी कहने की ज़रूरत ही नहीं थी। टेम्परेरी सापेक्ष शब्द है। परमानेन्ट है तो टेम्परेरी है।

मृत्यु का कारण

प्रश्नकर्ता : तो मृत्यु क्यों आती है?

दादाश्री : वह तो ऐसा है, जब जन्म होता है, तब ये मन-वचन-काया की तीन बेटरियाँ होती हैं, जो गर्भ में से इफेक्ट (परिणाम) देना शुरू करती है। जब वे इफेक्ट खत्म हो जाते हैं, 'बेटरियों' से भी हिसाब खत्म हो जाता है, तब तक वे बेटरियाँ रहती हैं और फिर जब वे खत्म हो जाती हैं तो उसे मृत्यु कहते हैं। लेकिन तब फिर अगले जन्म के लिए भीतर नई बेटरियाँ चार्ज हो गई होती हैं। अगले जन्म के लिए भीतर नई बेटरियाँ चार्ज होती ही रहती है और पुरानी 'बेटरियाँ' 'डिस्चार्ज' होती जाती है। ऐसे 'चार्ज-डिस्चार्ज' होता ही रहता है क्योंकि उसे 'रोंग बिलीफ' है। इसलिए 'कॉज़ेज़' उत्पन्न होते हैं। जब तक 'रोंग बिलीफ' हैं, तब तक राग-द्वेष और कॉज़ेज़ उत्पन्न होते हैं। और जब 'रोंग बिलीफ' बदल जाए और 'राइट बिलीफ' बैठ जाए तो फिर राग-द्वेष और 'कॉज़ेज़' उत्पन्न नहीं होंगे।

पुनर्जन्म

प्रश्नकर्ता : जीवात्मा मरने के बाद फिर से वापस आता है न?

दादाश्री : ऐसा है न, फॉरेन वालों का वापस नहीं आता है, मुस्लिमों का वापस नहीं आता है, लेकिन आपका वापस आता है। आप पर भगवान की इतनी कृपा है कि आपका वापस आता है। यहाँ से मरा कि वहाँ दूसरी योनि में चला जाता है। और उनका तो वापस नहीं आता।

अब वास्तव में ऐसा नहीं है कि वापस नहीं आते हैं। उनकी मान्यता ऐसी है कि यहाँ से मरा यानी मर गया, लेकिन वास्तव में वापस ही आता है। लेकिन उन्हें समझ में नहीं आता है। पुनर्जन्म ही समझते नहीं हैं। आपको पुनर्जन्म समझ में आता है न?

शरीर की मृत्यु हो तो वह जड़ हो जाता है। उस पर से साबित होता है कि उसमें जीव था, वह निकलकर दूसरी जगह गया। फॉरेन वाले तो कहते हैं कि यह वही जीव था और वही जीव मर गया। हम यह स्वीकार नहीं करते हैं। हम लोग पुनर्जन्म में मानते हैं। हम 'डेवेलप' (विकसित) हुए हैं। हम वीतराग विज्ञान को जानते हैं। वीतराग विज्ञान कहता है, 'पुनर्जन्म के आधार से हम इकट्ठे हुए हैं', ऐसा हिन्दुस्तान में समझते हैं। उसके आधार पर हम आत्मा को मानने लगे हैं। नहीं तो यदि पुनर्जन्म का आधार नहीं होता तो आत्मा माना ही कैसे जा सकता है?

तो पुनर्जन्म किसका होता है? तो कहते हैं, 'आत्मा है तो पुनर्जन्म है, क्योंकि देह तो मर जाता है, जला देते हैं', ऐसा हम देखते हैं।

अत: आत्मा के बारे में समझ पाए तो हल आ जाए न! लेकिन समझ पाए ऐसा नहीं है न! इसलिए तमाम शास्त्रों ने कहा कि 'आत्मा जानो!' अब उसे जाने बिना जो कुछ किया जाता है, वह सब उसे फायदेमंद नहीं है, हैल्पिंग नहीं है। पहले आत्मा जानो तो सारा सोल्युशन (हल) आ जाएगा।

पुनर्जन्म किसका?

प्रश्नकर्ता : पुनर्जन्म कौन लेता है? जीव लेता है या आत्मा लेता है?

दादाश्री : नहीं, किसी को लेना नहीं पड़ता, हो जाता है। यह संसार 'इट हैपन्स' (अपने आप चल रहा) ही है!

प्रश्नकर्ता : हाँ, मगर वह किससे हो जाता है? जीव से हो जाता है या आत्मा से?

दादाश्री : नहीं, आत्मा को कुछ लेना-देना ही नहीं है, सारा जीव से ही है। जिसे भौतिक सुख चाहिए, उसे योनि में प्रवेश करने का 'राइट' (अधिकार) है। जिसे भौतिक सुख नहीं चाहिए, उसे योनि में प्रवेश करने का राइट चला जाता है।

संबंध जन्म-जन्म का

प्रश्नकर्ता : मनुष्य के हर एक जन्म का पुनर्जन्म से संबंध है?

दादाश्री : वह तो, हर एक जन्म पूर्वजन्म ही होता है। अर्थात् हर एक जन्म का संबंध पूर्वजन्म से ही होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन पूर्वजन्म का इस जन्म से क्या लेना-देना है?

दादाश्री : अरे! अगले जन्म के लिए यह जन्म पूर्वजन्म है। यदि पिछला जन्म पूर्वजन्म है तो यह जो जन्म है वह अगले जन्म में पूर्वजन्म कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह बात सही है। लेकिन क्या पूर्वजन्म में ऐसा कुछ होता है, जिसका इस जन्म से कोई संबंध हो?

दादाश्री : बहुत ही संबंध, निरा! पूर्वजन्म में बीज पड़ता है और दूसरे जन्म में फल आता है। अत: उसमें, बीज में और फल में फर्क नहीं है? संबंध है या नहीं?! हम बाजरे का दाना बोएँ, वह पूर्वजन्म और बाल आए, वह यह जन्म, फिर से इस बाल में से बीज के रूप में दाना गिरा वह पूर्वजन्म और उसमें से बाल आए, वह नया जन्म। समझ में आया या नहीं?

प्रश्नकर्ता : एक व्यक्ति रास्ते पर से गुज़र रहा है और दूसरे कितने ही लोग रास्ते पर से गुज़र रहे हैं लेकिन साँप किसी एक को ही काटता है, क्या उसका कारण पुनर्जन्म ही है?

दादाश्री : हाँ, हम यही कहना चाहते हैं कि पुनर्जन्म है। इसलिए

वह साँप आपको काटता है, पुनर्जन्म नहीं होता तो आपको साँप नहीं काटता। पुनर्जन्म है, वह आपका हिसाब आपको चुकाता है। ये सभी हिसाब चुक रहे हैं। जिस तरह बहीखाते के हिसाब चुकता होते हैं न, उसी तरह ये सभी हिसाब चुक रहे हैं। और 'डेवेलपमेन्ट' के कारण ये सभी हिसाब हमें समझ में भी आते हैं। इसलिए हमारे यहाँ कितने ही लोगों को, पुनर्जन्म है ही, ऐसी मान्यता भी हो गई है न! लेकिन वे 'पुनर्जन्म' है ही, ऐसा नहीं कह सकते। 'है ही' ऐसा कोई सबूत नहीं दे सकते। लेकिन उसकी अपनी श्रद्धा में बैठ गया है, ऐसे सभी उदाहरणों से कि पुनर्जन्म है तो सही!

यह बहन जी कहेगी, इसको सास अच्छी क्यों मिली और मुझे क्यों ऐसी मिली? यानी संयोग सभी तरह-तरह के मिलने वाले हैं।

और क्या साथ में जाता है?

प्रश्नकर्ता : हर एक जीव, जब दूसरे देह में जाता है तो वहाँ साथ में पंचेन्द्रियाँ और मन आदि लेकर जाता है?

दादाश्री : नहीं, नहीं, कुछ भी नहीं। इन्द्रियाँ तो सभी एक्ज़ोस्ट (खाली) होकर खत्म हो गई, इन्द्रियाँ तो मर गई। इसलिए उसके साथ इन्द्रियों जैसा कुछ भी नहीं जाएगा। सिर्फ ये क्रोध-मान-माया-लोभ ही जाएँगे। उस कारण शरीर में क्रोध-मान-माया-लोभ सभी आ गए। और सूक्ष्म शरीर कैसा होता है? जब तक मोक्ष में नहीं जाते, तब तक साथ ही रहता है। चाहे कहीं भी जन्म ले लेकिन यह सूक्ष्म शरीर तो साथ ही होता है।

इलेक्ट्रिकल बॉडी

आत्मा देह को छोड़कर अकेला नहीं जाता। आत्मा के साथ फिर सारे कर्म, जो कारण शरीर कहलाते हैं वे, फिर तीसरा 'इलेक्ट्रिकल बॉडी' (तेजस शरीर), ये तीनों साथ ही निकलते हैं। जब तक यह संसार है,

तब तक हर एक जीव में यह इलेक्ट्रिकल बॉडी होती ही है! कारण शरीर बंधा कि इलेक्ट्रिकल बॉडी साथ में ही होती है। इलेक्ट्रिकल बॉडी हर एक जीव में सामान्य भाव से होती ही है और उसके आधार पर अपना चलता है। भोजन लेते हैं, उसे पचाने का काम इलेक्ट्रिकल बॉडी करती है। खून वगैरह बनता है, खून शरीर में ऊपर चढ़ाती है, नीचे उतारती है, वह सब कार्य करती रहती है। आँखों से दिखता है, वह लाइट इस इलेक्ट्रिकल बॉडी के कारण होती है। और ये क्रोध-मान-माया-लोभ भी इस 'इलेक्ट्रिकल बॉडी' के कारण ही होते हैं। आत्मा में क्रोध-मान-माया-लोभ हैं ही नहीं। यह गुस्सा भी, वह सब इलेक्ट्रिकल बॉडी के शॉक (आघात) हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी 'चार्ज' होने में 'इलेक्ट्रिकल बॉडी' काम करती होगी न?

दादाश्री : इलेक्ट्रिकल बॉडी हो तो ही चार्ज होता है। यदि इलेक्ट्रिकल बॉडी नहीं हो तो यह कुछ चलेगा ही नहीं। यदि 'इलेक्ट्रिकल बॉडी' हो और आत्मा नहीं हो, तब भी कुछ नहीं चलेगा। ये सारे समुच्य 'कॉज़ेज़' हैं।

गर्भ में जीव का प्रवेश कब?

प्रश्नकर्ता : संचार होता है, तभी जीव प्रवेश करता है। प्राण आता है, ऐसा वेदों में कहते हैं।

दादाश्री : नहीं, वे सभी बातें हैं। वे अनुभव की नहीं हैं, सच्ची बात नहीं हैं ये सब, लौकिक भाषा की। जीव के बिना कभी भी गर्भ धारण नहीं होता। जीव की उपस्थिति में ही गर्भ धारण होता है, नहीं तो धारण नहीं होता।

वह पहले तो अंडे की भांति बेभान अवस्था में रहता है।

प्रश्नकर्ता : क्या मुर्गी के अंडे में छेद बनाकर जीव भीतर गया?

दादाश्री : नहीं, वह तो यह लौकिक में ऐसा, लौकिक में आप कहते हैं, ऐसा ही लिखा है। क्योंकि गर्भ धारण होना, वह तो काल, सभी साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स... काल भी जब आ मिले, तब धारण होता है।

नौ महीने जब भीतर जीव रहता है, तब प्रकट होता है और यदि सात महीने का जीव हो, तब तो अधूरे महीने में पैदा हो गया, इसलिए कच्चा होता है। उसका दिमाग़-विमाग़ सब कच्चा होता हैं। सात महीने में पैदा हुआ इसलिए सभी अंग कच्चे होते हैं। और अट्ठारह महीनों में आया तब तो बात ही अलग, बहुत हाई लेवल (उच्च कोटी) का दिमाग़ होता है। अत: नौ महीने से ज़्यादा जितने महीने हों, उतना उसका दिमाग़ 'टॉप' होता है, क्या जानते हैं ऐसा?

क्यों बोलते नहीं? क्या आपने सुना नहीं है कि यह अट्ठारह महीने का है, ऐसा! सुना है कभी? पहले सुनने में नहीं आया होगा, नहीं? 'जाने दो, वह तो उसकी माँ कहती है कि अट्ठारह महीने का है!' वह तो बड़ा होशियार होता है। उसकी माँ के पेट में से बाहर निकलता ही नहीं। अट्ठारह महीनों तक रौब जमाता है वहाँ।

बीच में समय कितना?

प्रश्नकर्ता : यानी यह देह छोड़ना और दूसरा धारण करना, उन दोनों के बीच में वैसे, कितना समय लगता है?

दादाश्री : कुछ भी समय नहीं लगता। यहाँ भी होता है, यहाँ इस देह से निकल रहा होता है और वहाँ योनि में भी हाज़िर होता है, क्योंकि यह टाइमिंग है। वीर्य और रज का संयोग होता है, उस समय। इधर से देह छूटने वाला हो, तभी उधर, वह संयोग होता है, यह सब इकट्ठा हो तब यहाँ से जाता है। वर्ना वह यहाँ से जाता ही नहीं, अर्थात् मनुष्य की मृत्यु के बाद आत्मा यहाँ से सीधा ही दूसरी योनी में जाता है। इसलिए

आगे क्या होगा, उसकी कोई चिंता करने जैसा नहीं है। क्योंकि मरने के बाद दूसरी योनि प्राप्त हो ही जाती है और उस योनि में प्रवेश करते ही वहाँ खाना आदि सब मिलता है।

उससे सर्जन कारण देह का

जगत् भ्रांति वाला है, वह क्रियाओं को देखता है, ध्यान को नहीं देखता। ध्यान अगले जन्म का पुरुषार्थ है और क्रिया, वह पिछले जन्म का पुरुषार्थ है। ध्यान, वह अगले जन्म में फल देने वाला है। ध्यान हुआ कि उस समय परमाणु बाहर से खिंचते हैं और वे ध्यान स्वरूप होकर भीतर सूक्ष्मता से संग्रहित हो जाते हैं और कारण देह का सर्जन होता है। जब ऋणानुबंध से माता के गर्भ में जाता है, तब कार्य देह की रचना हो जाती है। जब मनुष्य मरता है तब आत्मा, सूक्ष्म शरीर तथा कारण शरीर साथ जाते हैं। सूक्ष्म शरीर हर एक का कॉमन होता है, परंतु कारण शरीर हर एक का उसके द्वारा सेवित कॉज़ेज़ के अनुसार अलग-अलग होता है। सूक्ष्म-शरीर, वह इलेक्ट्रिकल बॉडी (तेजस शरीर) है।

कारण-कार्य की शृंखला

मृत्यु के बाद जन्म और जन्म के बाद मृत्यु है, बस। यह निरंतर चलता ही रहता है! अत: यह जन्म और मृत्यु क्यों हुए हैं? तो कहते हैं, कॉज़ेज़ एन्ड इफेक्ट, इफेक्ट एन्ड कॉज़ेज़, कारण और कार्य, कार्य और कारण। उसमें यदि कारणों का नाश किया जाए तो ये सारे 'इफेक्ट' बंद हो जाएँगे, फिर नया जन्म नहीं लेना पड़ेगा!

यहाँ सारी ज़िंदगी जो 'कॉज़ेज़' खड़े किए हैं, वे आपके 'कॉज़ेज़' किसके यहाँ जाएँगे? और जो 'कॉज़ेज़' किए है, वे आपको कार्यफल दिए बगैर रहेंगे नहीं। 'कॉज़ेज़' खड़े किए हुए हैं, ऐसा आपको खुद को समझ में आता है?

हर एक कार्य में 'कॉज़ेज़' पैदा होते हैं। आपको किसी ने नालायक

कहा तो आपके भीतर 'कॉज़ेज़' पैदा हो जाते हैं। 'तेरा बाप नालायक है' वे आपके 'कॉज़ेज़' कहलाते हैं। आपको नालायक कहता है, तो वह तो नियमानुसार कह गया और आपने उसे गैरकानूनी कर दिया। वह समझ में नहीं आया आपको? क्यों बोलते नहीं?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : अर्थात् 'कॉज़ेज़ इस भव में बंधते हैं। उसका 'इफेक्ट' अगले जन्म में भुगतना पड़ता है!

यह तो 'इफेक्टिव' (परिणाम) मोह को 'कॉज़ेज़' (कारण) मोह मानने में आता है। आप सिर्फ ऐसा मानते हो कि 'मैं क्रोध करता हूँ' लेकिन जब तक आपको यह भ्रांति है, तब तक ही क्रोध है। बाकी, वह क्रोध है ही नहीं, वह तो इफेक्ट है। और जब कॉज़ेज़ बंद हो जाएँगे, तब सिर्फ इफेक्ट ही रहता है। और वह 'कॉज़ेज़' बंद किए इसलिए 'ही इज़ नोट रिस्पोन्सिबल फॉर इफेक्ट' (परिणाम के लिए खुद ज़िम्मेदार नहीं है) और 'इफेक्ट' अपना प्रभाव दिखाए बिना रहेगा ही नहीं।

कारण बंद होते हैं?

प्रश्नकर्ता : देह और आत्मा के बीच संबंध तो है न?

दादाश्री : यह देह है, वह आत्मा की अज्ञान दशा का परिणाम है। जो जो 'कॉज़ेज़' किए, उसका यह 'इफेक्ट' है। कोई आपको फूल चढ़ाए तो आप खुश हो जाते हो और आपको गाली दे तो आप चिढ़ जाते हो। उस चिढ़ने और खुश होने में बाह्य दर्शन की कीमत नहीं है। अंतर भाव से कर्म चार्ज होते हैं, उसका फिर अगले जन्म में 'डिस्चार्ज' होता है। उस समय वह 'इफेक्टिव' है। ये मन-वचन-काया तीनों 'इफेक्टिव' हैं। 'इफेक्ट' भोगते समय दूसरे नए 'कॉज़ेज़' उत्पन्न होते हैं, जो अगले जन्म में फिर से 'इफेक्टिव' होते हैं। इस प्रकार 'कॉज़ेज़ एन्ड इफेक्ट', 'इफेक्ट एन्ड कॉज़ेज़' यह क्रम निरंतर चलता ही रहता है।

सिर्फ मनुष्य जन्म में ही 'कॉज़ेज़' बंद हो सके, ऐसा है। अन्य सभी गतियों में तो सिर्फ 'इफेक्ट' ही है। यहाँ 'कॉज़ेज़' एन्ड 'इफेक्ट' दोनों हैं। हम जब ज्ञान देते हैं, तब 'कॉज़ेज़' बंद कर देते हैं। फिर नया 'इफेक्ट' नहीं होता है।

तब तक भटकना है...

'इफेक्टिव बॉडी' अर्थात् मन-वचन-काया की तीन बेटरियाँ तैयार हो जाती हैं और उनमें से फिर नए 'कॉज़ेज़' उत्पन्न होते रहते हैं। अर्थात् इस जन्म में मन-वचन-काया डिस्चार्ज होते रहते हैं और दूसरी तरफ भीतर नया चार्ज होता रहता है। जो मन-वचन-काया की बेटरियाँ चार्ज होती रहती हैं, वे अगले जन्म के लिए हैं और जो पिछले जन्म की हैं, वे अभी डिस्चार्ज होती रहती हैं। 'ज्ञानीपुरुष' नया 'चार्ज' बंद कर देते हैं। इसलिए पुराना 'डिस्चार्ज' होता रहता है।

इसलिए मृत्यु के पश्चात् आत्मा दूसरी योनि में जाता है। जब तक खुद का 'सेल्फ का रियलाइज़' (आत्मा की पहचान) नहीं हो जाता, तब तक सभी योनियों में भटकता रहता है। जब तक मन में तन्मयाकार होता है, बुद्धि में तन्मयाकार होता है, तब तक संसार खड़ा है। क्योंकि तन्मयाकार होना अर्थात् योनि में बीज पड़ना और कृष्ण भगवान ने कहा है कि योनि में बीज पड़ता है और उससे यह संसार खड़ा रहा है। योनि में बीज पड़ना बंद हो गया कि उसका संसार समाप्त हो गया।

विज्ञान वक्रगति वाला है

प्रश्नकर्ता : 'थियरी ऑफ इवोल्युशन' (उत्क्रांतिवाद) के अनुसार जीव एक इन्द्रिय, दो इन्द्रिय ऐसे 'डेवेलप' होता-होता मनुष्य में आता है और मनुष्य में से फिर वापस जानवर में जाता है। तो यह 'इवोल्युशन थियरी' में ज़रा विरोधाभास लगता है। वह ज़रा स्पष्ट कर दीजिए।

दादाश्री : नहीं। उसमें विरोधाभास जैसा नहीं है। 'इवोल्युशन की

थियरी' सब सही है। सिर्फ मनुष्य तक ही 'इवोल्युशन की थियरी' करेक्ट है, फिर उसके आगे की बात वे लोग जानते ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : प्रश्न यह है कि क्या मनुष्य में से वापस पशु में जाता है?

दादाश्री : ऐसा है, पहले डार्विन की थियरी 'उत्क्रांतिवाद' के अनुसार 'डेवेलप' होता-होता मनुष्य तक आता है और मनुष्य में आया इसलिए 'इगोइज़म' (अहंकार) साथ में होने से कर्त्ता बनता है। कर्म का कर्त्ता बनता है, इसलिए फिर कर्म के अनुसार उसे भोगने जाना पड़ता है। 'डेबिट' (पाप) करने पर जानवर में जाना पड़ता है और 'क्रेडिट' (पुण्य) करने पर देवगति में जाना पड़ता है या तो मनुष्यगति में राजापद मिलता है। अत: मनुष्य में आने के बाद फिर 'क्रेडिट' और 'डेबिट' पर आधारित है।

फिर नहीं हैं चौरासी योनियाँ

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा कहते हैं न कि मानवजन्म तो चौरासी लाख योनियों में भटककर आने के बाद मिला है, वह फिर से उतना भटकने के बाद ही मानवजन्म मिलता है न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। एक बार मनुष्य जन्म में आया फिर पूरी चौरासी में भटकना नहीं पड़ता है। उसे यदि पाशवता के विचार आएँ, तो अधिक से अधिक आठ भव उसे पशुयोनि में जाना पड़ता है, वह भी सिर्फ सौ-दो सौ वर्ष के लिए। फिर वापस यहीं का यहीं मनुष्य में आता है। एक बार मनुष्य होने के पश्चात् चौरासी लाख फेरों में भटकना नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : एक ही आत्मा चौरासी लाख फेरे फिरता है न?

दादाश्री : हाँ, एक ही आत्मा।

प्रश्नकर्ता : पर आत्मा तो पवित्र है न?

दादाश्री : आत्मा पवित्र तो इस समय भी है। चौरासी लाख योनियों में फिरते हुए भी पवित्र रहा है! पवित्र था और पवित्र रहेगा!

वासना के अनुसार गति

प्रश्नकर्ता : मरने से पहले जैसी वासना हो, उस रूप में जन्म होता है न?

दादाश्री : हाँ, वह वासना, अपने लोग जो कहते हैं न कि मरने से पहले ऐसी वासना थी, पर वह वासना कुछ लानी नहीं पड़ती है। वह तो हिसाब है, सारी ज़िंदगी का। सारी ज़िंदगी आपने जो किया हो, उसका मृत्यु के समय आख़िरी घंटा होता है तब हिसाब आता है और उस हिसाब के अनुसार उसकी गति हो जाती हैं।

क्या मनुष्य में से मनुष्य ही?

प्रश्नकर्ता : मनुष्य में से मनुष्य में ही जाएँगे न?

दादाश्री : आपकी इस समझ में भूल है। बाकी स्त्री की कोख से मनुष्य ही जन्म लेता है। वहाँ कोई गधा नहीं जन्म लेता। मगर वह ऐसा समझ बैठा है कि हम मर जाएँगे फिर भी मनुष्य में ही जन्म लेंगे तो वह भूल है। अरे, मुए तेरे विचार तो गधे के हैं, फिर मनुष्य किस प्रकार से होगा? तुझे जो विचार आते हैं 'किसका भोग लूँ, किसका ले लूँ'। बिना हक़ का भोगने के जो विचार आते हैं, वे विचार ही ले जाते हैं, अपनी गति में!

प्रश्नकर्ता : जीव का ऐसा कोई क्रम है कि मनुष्य में आने के बाद मनुष्य में ही आएगा या और कहीं जाएगा?

दादाश्री : हिन्दुस्तान में मनुष्य जन्म में आने के बाद चारों गतियों में भटकना पड़ता है। फॉरेन के मनुष्यों में ऐसा नहीं है। उनमें दो-पाँच प्रतिशत अपवाद होता है। दूसरे सब ऊपर चढ़ते ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : लोग जिसे विधाता कहते हैं, वे किसे कहते हैं?

दादाश्री : वे कुदरत को ही विधाता कहते हैं। विधाता नाम की कोई देवी नहीं है। 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स' (वैज्ञानिक सांयोगिक प्रमाण), वही विधाता है। हमारे लोगों ने तय किया कि छठी के दिन विधाता लेख लिख जाती है। विकल्पों से यह सब ठीक है और वास्तविक जानना हो तो यह सच नहीं है।

यहाँ तो कानून यह है कि जिसने बिना हक़ का लिया, उसके दो पैर के चार पैर हो जाएँगे। पर वह हमेशा के लिए नहीं है। ज़्यादा से ज़्यादा दो सौ साल और बहुत हुआ तो सात-आठ जन्म जानवर में जाते हैं और कम से कम, पाँच ही मिनटों में जानवर में जाकर, फिर से मनुष्य में आ जाता है। कितने ही जीव ऐसे हैं कि एक मिनिट में सत्रह जन्म ले लेते हैं, अर्थात् ऐसे भी जीव हैं। अत: जो जानवर में गए, उन सभी को सौ-दौ सौ साल का आयुष्य नहीं मिलेगा।

वह समझ आए लक्षण पर से

प्रश्नकर्ता : यह जो जानवर योनि में जाएँगे, उसका सबूत तो बताइए कुछ, उसे वैज्ञानिक आधार पर किस तरह मानें?

दादाश्री : यहाँ पर जो भौंकता रहता हो क्या ऐसा कोई इंसान मिला है आपको? 'क्या भौंकता रहता है?' क्या ऐसा आपने उससे कहा था? वह वहीं से, कुत्ते में से आया है। कोई बंदर की तरह हरकतें करें, ऐसे होते हैं! वे वहाँ से आए होते हैं। कोई बिल्ली की तरह ऐसे ताकते बैठे रहते हैं, आपका कुछ ले लेने के लिए, छीन लेने के लिए। वे वहाँ से आए हुए होते हैं। अर्थात् यहाँ पर वे कहाँ से आए हैं, यह भी पहचान सकते हैं और कहाँ जाने वाले हैं, यह भी पहचान सकते हैं। और वह भी फिर सदा के लिए नहीं। ये लोग तो कैसे हैं, इन्हें पाप करना भी नहीं आता हैं।

कलियुग के लोगों को पाप करना नहीं आता है और करते हैं पाप ही! इसलिए उनके पापों का फल कैसा होता है? बहुत हुआ तो पचास-सौ साल जानवर में जाकर वापस यहीं का यहीं आता है, हज़ारों वर्ष या लाखों वर्ष ऐसा नहीं। और कितने तो पाँच ही वर्ष में जानवर में जाकर वापस आ जाते हैं। इसलिए जानवर में जाना, उसे गुनाह मत समझना। क्योंकि वे तो तुरंत ही वापस आते हैं बेचारे! क्योंकि ऐसे पाप ही करते नहीं है न! इनमें शक्ति ही नहीं है ऐसे पाप करने की।

नियम, हानि-वृद्धि का

प्रश्नकर्ता : यह मनुष्यों की जनसंख्या बढ़ती ही गई है, इसका अर्थ यह कि जानवर कम हुए हैं?

दादाश्री : हाँ, सही है। जितने आत्मा हैं, उतने ही आत्मा रहते हैं लेकिन 'कन्वर्ज़न' (रूपांतर) होता रहता है। कभी मनुष्य बढ़ जाते हैं तो जानवर कम हो जाते हैं और कभी जानवर बढ़ जाते हैं तो मनुष्य कम हो जाते हैं। ऐसे कन्वर्ज़न होता रहता है। अब फिर से मनुष्य कम होंगे। अब सन् 1993 से शुरुआत होगी कम होने की!

तब लोग कैल्क्यूलेशन (गिनती) लगाते हैं कि सन् 2000 में ऐसा हो जाएगा और वैसा हो जाएगा, हिन्दुस्तान की आबादी बढ़ जाएगी, फिर हम क्या खाएँगे? ऐसा कैल्क्यूलेशन लगाते हैं। नहीं लगाते हैं? वह किसके जैसा है? 'सिमिली' (उपमा), बताऊँ?

एक चौदह साल का लड़का हो, उसका कद चार फुट और चार ईंच हो और अट्ठारहवे साल में पाँच फुट लंबा हो। तो कहते हैं, यदि चार साल में आठ ईंच बढ़ा, तब यह सत्तरहवें साल में कितना होगा? ऐसा कैल्क्यूलेशन लगाएँ, उसके जैसा यह आबादी का कैल्क्यूलेशन लगाते हैं!

बच्चों को दुःख क्यों?

प्रश्नकर्ता : निर्दोष बच्चे को शारीरिक वेदना भुगतनी पड़ती है? उसका क्या कारण है?

दादाश्री : बच्चे के कर्म का उदय बच्चे को भुगतना है और 'मदर' को वह देखकर भुगतना है। मूल कर्म बच्चे का, उसमें मदर की अनुमोदना थी, इसलिए 'मदर' को देखकर भुगतना है। करना, करवाना और अनुमोदन करना-ये तीन कर्मबंधन के कारण हैं।

मनुष्य भव की महत्ता

मनुष्यदेह में आने के बाद अन्य गतियों में जैसे कि देव, तिर्यंच अथवा नर्क में जाकर आने के बाद फिर से मनुष्य देह प्राप्त होती है। और भटकन का अंत भी मनुष्य देह में से ही मिलता है। यह मनुष्यदेह अगर सार्थक करना आ गया तो मोक्ष की प्राप्ति हो सके, ऐसा है और नहीं आया तो भटकने का साधन बढ़ा दे, वैसा भी है! दूसरी गतियों में सिर्फ छूटता है। इसमें दोनों ही हैं। छूटता है और साथ-साथ बंधता भी है। इसलिए दुर्लभ मनुष्यदेह प्राप्त हुआ है तो उससे अपना काम निकाल लो। अनंत अवतार आत्मा ने देह के लिए बिताए। एक अवतार यदि देह आत्मा के लिए निकाले तो काम ही हो जाएगा!

मनुष्यदेह में ही यदि ज्ञानीपुरुष मिलें तो मोक्ष का उपाय हो जाए। देवता भी मनुष्यदेह के लिए तरसते हैं। ज्ञानीपुरुष से भेंट होने पर, तार जुड़ने पर, अनंत जन्मों तक शत्रु समान रहा देह परम मित्र बन जाता है! अत: इस देह में आपको ज्ञानीपुरुष मिले हैं तो पूरा-पूरा काम निकाल लो। पूरा ही तार जोड़कर तड़ीपार उतर जाओ।

अजन्म-अमर को आवागमन कहाँ से?

प्रश्नकर्ता : परंतु आवागमन का फेरा किसे है?

दादाश्री : जो अहंकार है न, उसे आवागमन है। आत्मा तो मूल दशा में ही है। अहंकार फिर बंद हो जाता है, इसलिए उसके फेरे बंद हो जाते हैं!

फिर मृत्यु का भी भय नहीं

प्रश्नकर्ता : मात्र यह सनातन शांति प्राप्त करे तो वह इस जन्म के लिए ही होती है या जन्मों जन्म की होती है?

दादाश्री : नहीं। वह तो परमानेन्ट हो गई, वह तो। फिर कर्त्ता ही नहीं रहा, इसलिए कर्म नहीं बंधते। एकाध जन्म में या दो जन्मों में मोक्ष होता ही है, छुटकारा ही नहीं है, चलता ही नहीं है। जिसे मोक्ष में नहीं जाना हो, उसे यह धंधा ही नहीं करना चाहिए। इस लाइन में पड़ना ही नहीं। जिसे मोक्ष पसंद नहीं हो तो इस लाइन में पड़ना ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : यह सब 'ज्ञान' है, क्या वह दूसरे जन्म में याद रहता है?

दादाश्री : सब उसी रूप में होगा। बदलेगा ही नहीं। क्योंकि कर्म बंधते नहीं, इसलिए फिर उलझनें ही खड़ी नहीं होतीं न!

प्रश्नकर्ता : तो क्या इसका अर्थ ऐसा हुआ कि हमारे गत जन्म के कर्म ऐसे हैं जिनके कारण उलझनें चलती ही रहती हैं?

दादाश्री : पिछले जन्म में अज्ञानता से जो कर्म बंधे, उन कर्मों का यह इफेक्ट है अब। इफेक्ट भोगने पड़ते हैं। इफेक्ट भोगते-भोगते, और यदि ज्ञानी नहीं मिले तो फिर से नए कॉज़ेज़ और परिणाम स्वरूप नए इफेक्ट खड़े होते रहते हैं। इफेक्ट में से फिर कॉज़ेज़ उत्पन्न होते ही रहेंगे और वे कॉज़ेज़ फिर अगले जन्म में इफेक्ट देंगे। कॉज़ेज़ एन्ड इफेक्ट, इफेक्ट एन्ड कॉज़ेज़, कॉज़ेज़ एन्ड इफेक्ट, इफेक्ट एन्ड कॉज़ेज़, कॉज़ेज़ एन्ड इफेक्ट वह चलता ही रहता है। इसलिए ज्ञानीपुरुष जब कॉज़ेज़ बंद कर देते हैं, तब सिर्फ इफेक्ट ही भुगतने का रहा। इसलिए कर्म बंधने बंद हो गए।

इसलिए, सारा 'ज्ञान' याद रहता ही है, इतना ही नहीं लेकिन खुद वह स्वरूप ही हो जाता है। फिर तो मरने का भी भय नहीं लगता। किसी का भय नहीं लगता, निर्भयता होती है।

अंतिम समय की जागृति

जीवित हैं, तब तक

प्रश्नकर्ता : दादाश्री, ज्ञान लेने से पहले के, इस भव के जो पर्याय बंध गए हों, उनका निराकरण किस प्रकार आएगा?

दादाश्री : जब तक हम जीवित हैं, तब तक पश्चाताप करके उन्हें धो डालना है, लेकिन वे कुछ ही, पूरा निराकरण नहीं होता है लेकिन ढीले तो हो ही जाते हैं। ढीले पड़ गए इसलिए अगले जन्म में हाथ लगाते ही तुरंत गाँठ छूट जाएगी!

प्रश्नकर्ता : प्रायश्चित से बंध छूट जाते हैं?

दादाश्री : हाँ, छूट जाते हैं। अमुक प्रकार के ही बंध हैं, वे कर्म प्रायश्चित करने से मज़बूत गाँठ में से ढीले हो जाते हैं। अपने प्रतिक्रमण में बहुत शक्ति है। दादा को हाज़िर रखकर करो तो काम हो जाएगा।

यह ज्ञान मिलने के बाद हिसाब महाविदेह का

कर्म के धक्के से जो जन्म होने वाले हों वे होंगे, शायद एक-दो जन्म, लेकिन उसके बाद सीमंधर स्वामी के पास ही जाना पड़ेगा। यह यहाँ का धक्का, हिसाब बांध लिया है पहले से, कुछ चिकना हो गया है न तो वह पूरा हो जाएगा। और कोई चारा ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करने से कर्म के धक्के कम होते हैं?

दादाश्री : कम होते हैं न! और जल्दी निपटारा आ जाता है।

'हमने' ऐसे किया निवारण विश्व से

प्रतिक्रमण कर-करके जितनी भूलें खत्म की, उतना मोक्ष नज़दीक आया।

प्रश्नकर्ता : दूसरे जन्म में फिर वे फाइलें चिपकेंगी नहीं न?

दादाश्री : क्यों? हमें दूसरे जन्म से क्या लेना है? यहीं के यहीं प्रतिक्रमण इतने कर डालें। फुरसत मिलते ही उसके लिए प्रतिक्रमण करते रहना चाहिए। 'चंदू भाई' से 'आपको' इतना कहना पड़ेगा कि प्रतिक्रमण करते रहो। आपके घर के सभी सदस्यों के साथ, आपको कुछ न कुछ पहले दु:ख हुआ होता है, उन सब के आपको प्रतिक्रमण करने हैं। संख्यात या असंख्यात जन्मों में जो राग-द्वेष, विषय, कषाय के दोष किए हैं, उनकी क्षमा माँगता हूँ। ऐसे रोज़ एक-एक व्यक्ति का, ऐसा घर के हर एक व्यक्ति को याद कर-करके करना चाहिए। बाद में आस-पास के, पास-पड़ोस के सब को लेकर उपयोग रखकर यह करते रहना चाहिए। आप करोगे उसके बाद यह बोझा हलका हो जाएगा। यों ही हलका नहीं होता।

हमने सारे विश्व के साथ इस प्रकार निवारण किया है। पहले ऐसे निवारण किया था, तभी तो यह छुटकारा हुआ। जब तक हमारा दोष आपके मन में है, तब तक मुझे चैन नहीं लेने देगा! अत: जब हम ऐसा प्रतिक्रमण करते हैं, तब वहाँ मिट जाता है।

मृतकों के प्रतिक्रमण?

प्रश्नकर्ता : जिसकी क्षमा माँगनी है, यदि उस व्यक्ति का देह विलय हो गया हो तो प्रतिक्रमण कैसे करें?

दादाश्री : देहविलय हो गया है तो उसकी फोटो हो, उसका चेहरा याद हो तो कर सकते हैं। यदि चेहरा ज़रा सा भी याद नहीं हो और नाम मालूम हो तो नाम लेकर भी कर सकते हैं तो उसको पहुँच जाएगा सब।

प्रश्नकर्ता : अत: मृतक व्यक्ति के प्रतिक्रमण किस प्रकार करें?

दादाश्री : मन-वचन-काया, भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म, मृतक का नाम तथा उसके नाम की सर्व माया से भिन्न ऐसे, उसके शुद्धात्मा को याद करना, और बाद में 'ऐसी गलतियाँ की थीं' उन्हें याद करना (आलोचना) उन गलतियों के लिए मुझे पश्चाताप होता है और उनके लिए मुझे क्षमा करो (प्रतिक्रमण)। ऐसी गलतियाँ नहीं होंगी ऐसा दृढ़ निश्चय करता हूँ। ऐसा तय करना है (प्रत्याख्यान)। 'हम' खुद चंदू भाई के ज्ञाता-दृष्टा रहें और जानें कि चंदू भाई ने कितने प्रतिक्रमण किए, कितने सुंदर किए और कितनी बार किए।

- जय सच्चिदानंद

अंतिम समय की प्रार्थना

'हे दादा भगवान, हे श्री सीमंधर स्वामी प्रभु, मैं मन-वचन-काया ...★ (जिसका अंतिम समय आ गया हो वह व्यक्ति, खुद का नाम ले)... तथा ..★.. के नाम की सर्व माया, भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म आप प्रकट परमात्म स्वरूप प्रभु के सुचरणों में समर्पित करता हूँ।

हे दादा भगवान, हे श्री सीमंधर स्वामी प्रभु, मैं आपकी अनन्य शरण लेता हूँ। मुझे आपकी अनन्य शरण मिले। अंतिम घड़ी पर हाज़िर रहना। मुझे उँगली पकड़कर मोक्ष में ले जाना। अंत तक संग में रहना।

हे प्रभु, मुझे मोक्ष के सिवाय इस जगत् की दूसरी कोई भी विनाशी चीज़ नहीं चाहिए। मेरा अगला जन्म आपके चरणों में और शरण में ही हो।'

'दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो' बोलते रहना।

★ (जिसका अंतिम समय आ गया हो, उसे इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।)

(इस प्रकार वह व्यक्ति बार-बार बोले अथवा कोई उसके पास बार-बार बुलवाए।)

मृत व्यक्ति के प्रति प्रार्थना

आपके किसी मृत स्वजन या मित्र के लिए इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

'प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, प्रत्यक्ष सीमंधर स्वामी की साक्षी में, देहधारी ...★... के मन-वचन-काया के योग, भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म से भिन्न ऐसे हे शुद्धात्मा भगवान, आप ऐसी कृपा करो कि ..★.. जहाँ हो वहाँ सुख-शांति पाए, मोक्ष पाए।

आज दिन के अद्यक्षण पर्यंत मुझ से ..★.. के प्रति जो भी राग-द्वेष, कषाय हुए हों, उनकी माफ़ी चाहता हूँ। हृदयपूर्वक पछतावा करता हूँ। मुझे माफ करो और फिर से ऐसे दोष कभी भी नहीं हों, ऐसी शक्ति दो।'

★ (मृत व्यक्ति का नाम लें)

(इस प्रकार बार-बार प्रार्थना करनी चाहिए। बाद में जितनी बार मृत व्यक्ति याद आए, तब-तब यह प्रार्थना करनी चाहिए।)

शुद्धात्मा के प्रति प्रार्थना

(प्रतिदिन एक बार करें)

हे अंतर्यामी परमात्मा! आप प्रत्येक जीवमात्र में विराजमान हैं, वैसे ही मुझ में भी विराजमान हैं। आपका स्वरूप ही मेरा स्वरूप है। मेरा स्वरूप शुद्धात्मा है।

हे शुद्धात्मा भगवान! मैं आपको अभेद भाव से अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

अज्ञानतावश मैंने जो जो ★★ दोष किए हैं, उन सभी दोषों को आपके समक्ष ज़ाहिर करता हूँ। उनका हृदयपूर्वक बहुत पश्चाताप करता हूँ और आपसे क्षमा-याचना करता हूँ। हे प्रभु! मुझे क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए और फिर से ऐसे दोष नहीं करुँ, ऐसी आप मुझे शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

हे शुद्धात्मा भगवान! आप ऐसी कृपा करें कि हमारे भेदभाव छूट जाएँ और अभेद स्वरूप प्राप्त हो। मैं आप में अभेद स्वरूप से तन्मयाकार रहूँ।

★★ (जो जो दोष हुए हों, वे मन में ज़ाहिर करें।)

प्रतिक्रमण विधि

प्रत्यक्ष 'दादा भगवान' की साक्षी में, देहधारी ★ के मन-वचन-काया के योग, भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म से भिन्न, ऐसे हे शुद्धात्मा भगवान! आपकी साक्षी में, आज तक मुझसे जो जो ★★ दोष हुए हैं, उनके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ, हृदयपूर्वक बहुत पश्चाताप करता हूँ। मुझे क्षमा कीजिए और फिर से ऐसे दोष कभी भी नहीं करुँ, ऐसा दृढ़ निश्चय करता हूँ। उसके लिए मुझे परम शक्ति दीजिए।

★★ क्रोध-मान-माया-लोभ, विषय-विकार, कषाय आदि से उस व्यक्ति को जो भी दुःख पहुँचाया हो, उन दोषों को मन में याद करें।

★(जिसके प्रति दोष हुआ हो, उस व्यक्ति का नाम)

संपर्क सूत्र

दादा भगवान परिवार

अडालज : **त्रिमंदिर**, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421
फोन : 9328661166/9328661177
E-mail : info@dadabhagwan.org

मुंबई : **त्रिमंदिर,** ऋषिवन, काजुपाडा, बोरिवली (E)
फोन : 9323528901

दिल्ली	: 9810098564	**बेंगलूर**	: 9590979099
कोलकता	: 9830080820	**हैदराबाद**	: 9885058771
चेन्नई	: 7200740000	**पूणे**	: 7218473468
जयपुर	: 8890357990	**जलंधर**	: 9814063043
भोपाल	: 6354602399	**चंडीगढ़**	: 9780732237
इन्दौर	: 6354602400	**कानपुर**	: 9452525981
रायपुर	: 9329644433	**सांगली**	: 9423870798
पटना	: 7352723132	**भुवनेश्वर**	: 8763073111
अमरावती	: 9422915064	**वाराणसी**	: 9795228541

U.S.A. : **DBVI Tel. :** +1 877-505-DADA (3232),
Email : info@us.dadabhagwan.org

U.K. : +44 330-111-DADA (3232)

Kenya : +254 722 722 063

UAE : +971 557316937

Dubai : +971 501364530

Australia : +61 421127947

New Zealand : +64 21 0376434

Singapore : +65 81129229

www.dadabhagwan.org

अंतिम दिनों में ऑक्सीजन पर फिर भी मुक्त हास्य...

पहुँचते हैं सिर्फ भाव केस्पंदन

बच्चे या किसी भी स्वजन केदेहान्त केबाद चिन्ता करने से उन्हें दुःख होता है। लोग अज्ञानता केकारण ऐसा सब करते हैं। अतः आपको, यह जैसा है वैसा जानकर शांतिपूर्वक रहना चाहिए, बेकार ही परेशान होने का क्या अर्थ है? ये तो सांसारिक ऋणानुबंध हैं, लेन देन के हिसाब। मृत्यु क्या है? खाते केहिसाब खत्म हुए! यदि वे हमें बहुत याद आएँ तो क्या करना चाहिए ? वीतराग भगवान से कहना चाहिए कि इन्हें शान्ति दीजिए। हम भावना करेंगे तो उन तक ज़रुर पहुँचेगी।

- दादाश्री

ISBN 978-93-86289-61-2

Printed in India

Price ₹15

dadabhagwan.org